

॥८॥ उनमः सिद्धेन्या ॥ वेष्टा ॥ अंते तजि ने श्वर रपाय प्रणमि सुं। तींथि
कर अंति निरमलो ॥ कांछि तफल कहू दान दातार। सारदा स्वामीनी
वलास्तुमु ॥ बुधि सार हू वेग माणु ॥ गणै धर स्वामी ने नमस्करू ॥ व
लीस्तु कल कीरति ज्ञवतार। मुनि चुवन कीरति गुरु प्रणमीनि
बहाँ जिए दास न ऐ सार ॥ भा ॥ ज्ञासय सोधरनी ॥ ज्ञवी वरण ज्ञा
वेइ सुरणो अराज। हुं कहि सुं वर वाणी। अंते तवर तरास निरमलो सां
चदो सुरव छंरा ॥ १॥ जै बुध्वां प्रमेजो रिं सार ॥ जर नहै त्रै त स्ते
जांणो। मगध देश माहि नयर सार। राजगही वषांणो ॥ २॥ अरेणि
कराजों के रहराज। जंरे लालि जंडो। सचिलण रां एति संन्तए ॥ ब
हू रुय अयारा ॥ ३॥ जै ज्ञधर मकरे निरमलो। समक्ति तगुण बांत ॥
दान पूजागुणो अगद्वो। ते छिंयाय वेत ॥ ४॥ एकवार माहा व
देवं वा अव्याज वतार। बिषु लोच लिंग्रति निरमलो। स्वा
भिंगुण अमरे ॥ ५॥ अरेणि कराजा चालीयो। बादवा जद्ववेता वा
द्याजिरां वर निरमलो। बिरेगुरा वेत ॥ ६॥ धर मसुणो ति
हाँ बिरमलो। सास्त्रास हीत सुजा ए ॥ तीणि अवसरि एक अ

॥४॥ राजा जिमन्नां ए॥ ५॥ द्यैपसो लाभमिश्रागतो। सोहिं जिमवंदे
रमवंतसो होमणो। जिसोगुए कंद॥ ६॥ उपन्नंत वीर्यत सनामसा
॥ ७॥ लामतीत सराणा। सीलवंती गुणी आगली। रुप्यसुरवना प्राणा॥
॥ ८॥ चौदसहस्रगजसहित सारारथ तेतत्ताजां ए॥ चौदलह
उरंगमा। तेजीचपलवरवाँगो॥ ९॥ चौदकोडिपालक इलासेवक
रब्बलवंत। चौदसहस्र अते वरी। रुप्येगुए वंत॥ १०॥ चौदसेकुव
रसोहोंगणा। जिंसाकामंदेव। अनेकराजातवर्त्तन्तरो। करेव
दुसेव॥ ११॥ अवररिहिं छें अतिघणी। किमनलाजेपाराधर म
फत्तेसुरवन्नोगविंधरमकरेतेसार॥ १३॥ तिदेवा विस्मयहवो। श्रे
णीकमनमाहि। रुपसो जागो देषीकरो। वलीवती साहो चाह॥ १४॥
तवन्नेणिकराजाउरीयो। औछिंसिरनामी। कहोस्वामी। तद्देहा
नवंत। जिनवरसुरगामी॥ १५॥ एराजाअतिहवडो। त्राव्यो इ
हांकंग। कवराधरमकीयो। इविशालति कहोतह्येरंग॥ १६॥
॥ १७॥ जिनवरस्वामी। मधुरीवांण। कहेजेवंत। नवांतरकहूँसुणे

एहतएा॥ ज्ञेणिकजयवंता॥१७॥ नरतहेत्रमांदिजोर्णैश्वान्
योध्यासारात्रयोध्मक्षेनयरएकछौं। अतिसविकार॥१८॥
पदमष्टटेदनयरनामासोहतिचंग। सोमावामीबलणव
सिंसास्त्रपठमनरंग॥१९॥ सोमावाह्नएतसतएा। हासिगु
एवंताधननहतिदगे दसारात्रिएा द्वुखवंत॥२०॥ केटाछेव
लीअतिघणीयापकलिएरा। कलदकरितेअतिघणो। द्वुख
सहिअतिघोर॥२१॥ कएएटिमागिअतिघणी। धरिअरिसविसा
लपेटनजरायितेहतणो। ज्वरखलागिजिमकालौ॥२२॥ दुहा॥
एकवारकएआएआ। जांछमांगीकरीजाए। तोहिनवप्सरि
तेदघरि। सहितेदूषनीरवाए॥२३॥ जिमवाकारणोरुवडो। बेगोति
सुविचार। अन्नघोउोन्नरखघणो। पाम्योदुरकअपार॥२४॥ जास
वीनताना॥ बाह्यएकहिसुएगजार। अन्नघोउोतद्वेत्रासीघो
ए। किमवदिसिसुउचाया। कएमागतोतद्वेसुए।॥२५॥ नहुकि
हेष्टएोकतो। धरिओरउअतिघणरे। तेजिमिबदुअन्नतो॥

किं भवति तत्त्वं एते राजा हृषीकेशो द्युमोरा इणि न अर
यद्यपि वामा एत्र धृष्टम् यज्ञो सुधोरा किं तत्त्वं गति लक्षणा कहा
एता ॥ ४ ॥ वृग्न वृग्न छांटि चूम्हि दुर्व पाम्हिपुरा आपरा राति द मु
लोत्तरे कंता मत्त्वं चृडा तत्त्वं तत्त्वं एता ॥ ५ ॥ जिन धरमं च त्रिति
चृंगा ते सच्चरा चरजा एत्यर्थो तीणि कौदृष्टि दोइ सुरवा ज विज्ञ
ग जाववद्या एव लिया ॥ ६ ॥ जिस उत्तिस जितवर धर्मा की जीप अ
ति हि सोहा तत्त्वं एति तत्त्वं पापदि ला सादु रवदा लिङ्गजा इ
त्रति ठिलोया ॥ ७ ॥ एगं सहोटो तत्त्वं कंता अवरगा मिह विजार
जिं रामावक सां दिज अवंता जिन वर स्वामि धम्माइयि या ॥ ८ ॥
नारात्तरो वो ल सारो मान्यो तदता णि तिर मत्तो एता हर रवउवने
तव घोरा ब्रह्मण मनिगुण सङ्ख इत्तलो एता ॥ ९ ॥ ति हां यूको निसष्टि
ठो जांगा ते ब्राह्मण मनो रथ धरई एता निसनि तेजो वाँक ल
इयो तो न राता ॥ १० ॥ ते एणि अवसरि सुरजायो विभां न विग्रह

तिरुवडाय। इंदूइंदूएणीचंगादिवद्वैन्नावेजख्या ए॥१०॥८८ वद्या
धरवलीदीर। विभान्नसह्यंतगुणेणात्रागलाए। ज्ञावधरामनमा
दि। जयजयकारक्तरक्तरमलाए॥१॥ नोभिगोचरवली
दीव। हयगत्यरथबद्धयात्कीरथवलमेंगलगीत साराचा
जित्रवाजिरंगन्तराए॥१२॥ तिदेष्याविप्रसार। विस्मयमास्ते
त्रतिघणेएतवपूर्णिकाकाजे। मनहरघ्योऽजास्तरातएोए
॥१३॥ कहोन्नवियरणत्तद्विज्ञान। कांदांजाउछोमनरत्ती
ए। तेतम्हेकहोमुझवातीत्रनंदकेरामनरंटरए॥१४॥ त
वन्नवीवगतेचंग। बोल्याकाणिसोहामेणीए। अनेतजिनि
सरस्सोरेदेव। यसत्राकरवान्नामण्णए॥१५॥ सुरनरन्नवाय
एसाराजावसहीतत्रतिनीरमलाए। समोवंसररामांदिजा
ए। धरमसुरेवासोहामेजलाए॥१६॥ तवहरघ्योतेवित्र
जयजयकारतिएकायोए। चात्वायोन्नावसहीत। ज्ञावध
णेमानमोहिधरारए॥१७॥ निनप्रदक्षणादेशनमोसुरका

योतिरीसुवडोरा तवनं कायो बहूच्चेग। नावघलो मनमांहिध
रोर॥१८॥ तद्देस्वामगुरावंता संसारसागर बेडुल्नार। हा
रेपरमाक्षंदा माहारोमनर द्योजउरोप्ति॥ द्वदा॥ अनंतज्ञान
करीच्छतंकसुपादर्वान्निच्छनंता सौख्यत्रनंतेजजांणीइ। कार्य
चनंतसहीत॥१९॥ नलिंस्वामिमिदेशीवान्यएसफलहवांच्छ्रा
जाजन्मसफलहवोनिरमन्तो। अजसरामुझकाज॥२०॥ अजद
रिदुङ्गरिगयो। जन्मतणोदुखगयो। मुझधोरानलिरवामीमुझन्ने
दृष्ट्यो। पायंगयोमुझधोर॥२१॥ तद्विरास्वामीयच्छतियए॥ दुःरक
दीर्घांच्छयारा संसारसागरमांहिमश्चतियए॥ तेच्छतिदुःरकनिवार॥
श॥। इमकहीविनयकरो। बेरोसन्नामजारा हरषच्छानंदमनमांहिध
रा। नावसहीतसविकार॥२५॥ छ॥। नासरासन॥। जिनकरवाणीरम
त्वीयामधुराच्छमीयसमाएतो। बारसन्नातिदांसांनलिय। अगमत
वविचारतो॥ तवडाह्नएतिहांबुझायोए। मिथ्यावगलिगयोघोरते
समकितनिरमन्तोउपनोर। आवकहवोतेघोरतो॥२७॥ बारवरत
त्वीयानिरमन्तोर। आवकहवोसारतो। दानमूजागुराच्छागतोर।

दया तरंणो नांडारतो ॥३४॥ वृत्ती ब्रह्मतमागेनि रमलो एते ब्राह्मण
अतिचंगतो ॥ जिमदा द्विदुजाश्च अतिधणो ए। फलन प्रामुङ्गु वृत्तगते
॥४॥ तवस्वा मीकुहिनि सत्त्वाश्च अनंत ब्रह्मत करो सारतो ॥ यम
सुखप्रयामो अतिथएण ए। वलीतरीए सांसारतो ॥५॥ नाड्वो मास
ऊजालडो ए। एकादशी अतिचंगतो ॥ करायि एकाश्च एंसुरु वडए
ते रसिलगिमनरंगतो ॥६॥ चउदसि दिनउपवास करए। निरम
ल अतिगुणवंततो ॥ च्यारदिवस एरु वडा ए। ब्राह्मण यात्वे जयवं
ततो ॥७॥ ज्ञानिशाजन करो रुवडो ए। सचिन्तवं सुधरा त्यागतो ॥
पोसा सहौन अतिनिरमलो ए। विधिकरो सोनागतो ॥८॥ अनंत क
रावासुरवडा ए। सोवर्षस्त्याकेरासारतो ॥ जो पोहो विनहि अतिधा
एीए। सुत्रकेरो विचारतो ॥९॥ चउद्देश्यागंगिअतिनिरमलो ए
गुणमहीतजयवंततो ॥ चउदचउदगुणासुरवडा ए। एक एकं गां
विकलघंततो ॥१०॥ एवं कारिनिरमलाए। एक सोषु तुंगुणा
होइतो। नेक हविनिरमला ए। तह्येन वियरा सुरोरगते
॥११॥ मधुउद्देश्यो जिन्हेवंरसकृजाए। स्वामी यत्रिच्छुवनत्तारतो ॥

तेगुणात्वैइकर्णिं तद्वागार्थकर्मिं गुयोत्त्वेसविचारतो॥१२॥ते
द्वन्द्वसिद्धत्वागा तेव्वाज्यवंतत्तो तिगुणात्तिइकर्णिरसद्वर्द्धे
वर्जाणयोमविचारतो॥१३॥त्वैद्वर्तकरसवडागा तत्तिवृष्टि
तागाद्विष्टतत्तो तिगुणत्वेइकर्णिरसद्वागा त्रिजाणयोमविच
रतो॥१४॥त्वैद्वर्ततिस्यप्रसवडारद्वकराध्यगुणवृत्ततो तिगुणवृ
त्तकर्णिरसद्वागा त्वैद्वागुयोज्ञवंतत्तो॥१५॥त्वौद्वर्तहिंद
वर्जाणयोत्तवत्तारतो॥१६॥त्वैद्वगुणस्त्रिवक्तुगुणा।मुक्तिं त
लादतारतो तिगुणत्वैकर्णिरसद्वागा।द्वर्तणयेनवत्
रतो॥१७॥त्वैद्वर्तग्रामर्जीगारसवडागा जिवसिद्धातत्तजारतो
तिगुणत्वैइकर्णिरसवडागा मातसांगुयोक्तुविचारतो॥१८॥त्वै
द्वजावसमासस्तुलगोगा दल्लायात्वेवाकाजित्तो तिगुणत्वैइकर्णि
सवडागा।आरम्भीगुण्डोऽर्थकारतो॥१९॥त्वौद्वनदो मोहनर्ग
सवडागा।आरम्भीगुण्डोऽर्थकारतो॥२०॥त्वैद्वर्तगुणत्वैइकर्णि
सवडागा।त्वैद्वर्तगुणत्वैइकर्णिरसद्वर्ततो॥२१॥त्वैद्वर्त

तेह नाम तो। तेह गुण ले इकरी सुहि जला शदश मीगंयो सुजां एतो।।१७॥ चौं दरन्न सो हाम ए। एचक्र वर्ति कद्गि हो इचंग तो। तेह तरण गुण
ले इकरी। इग्यार मीगंरित तंग तो।।१८॥ चौं दस्त्र अतिरुवडा ए। अन्न
न मादिधुरि आदतो। तेह गुण ले इकरी निर माला ए। बार मीगंयो तेसार
तो।।१९॥ चौं दति थित्रिति निर मला ए। बृत लीयो ससार तो। तेह तरण
एत्तल इकरी। तेर मीगंयो सविकार तो।।२०॥ चौं दमल एका वेग लाए
मुनिवरं ले इच्छा हार तो। तेह तरण गुण ले इकरी। चौं दमीगंयो चव
तार तो।।२५॥ दुहा॥ ए आगमं गुण निर मला। अनंत करा को चंग। देमत
एण अज्ञि रुवडा। ज्ञावधरी बद्ध रंग॥ १॥ जिन दर आगति धाय ये मिर
उपरि सविसाल। पंचामृत नम्हए करो। ज्ञावधर एण माल॥ २॥ अति
शंकरा को गुरु कन्हे। महोऽवसहित सुजां ए। पूजा करा को अति निर
मली। अष्टप्रकारी स्त्रवद्वाण॥ ३॥ चौं दत्रष्टु कञ्चन तिरुवडाँ। छंद वर्षज
र माला ईत्तल मंगलगीत रा। इस्तो। मोहोऽवसहित एण माल॥ ४॥ पक्ष का
न अति दस्त्र वडाँ। फल फूल सविसाल। कपूर तणी करो आरंती। दीप धु
गुण माल॥ ५॥ जास चौपश॥ चार दीव संलग्नि। नृजो सार। इणियरि न
वेयण न स्त्रेसवि चाँर। चौं दस्त्रि दिन जाग गाज सुविजाति। करो संत्र मह

तहेगुणमात्मा ॥१॥ जापदोजित्रगेत्रसोसारानिरमलफूलत्रकृत्वेष
कार। ध्यानमौनसुहीतगुणवंत। इति परिभ्रत करोमन्तरम् जयवंताः
पछि निजधिरपूजोजिनदेव। जावस हितकरोत्सेव। उत्तममध्यम
जघन्तजाए। गुणवंतपात्रनेह्योवत्तीदान। ॥२॥ पछियारणोकोजित्र
तिचंग। सजनसहितआपणोमनरंग। इति परिचौदवरसंबगिकरो
जिनवरघरणाकमलमनिदूरो। ॥३॥ पछिउजवणोकोजिसार। विधि
सहितस्त्रणोस्त्रविचार। चौदत्रनंतकरावोचंग। हेमतणा तेज
तिउत्तंग। ॥४॥ चौदमुस्तकविरवावोसार। चारनियोगञ्चागमवि
स्त्वार। कल्पसचौदकरावोचंग। नीगारचौदसुलंत्वीतउत्तंग। ॥५॥
जयघंटाचौदकरावोचंग। कंसालांजोडित्रतिउत्तंग। धूपदह
नयीगांण। सार। चामरजोड। ऊजलांसविचार। ॥६॥ धूजातीरण
आरतीसविसाल। जामंडलतारीकादीयमात्म। दोयमात्माचौ
दगुणवंत। चंदनकपूरकुंकमजघचंत। ॥७॥ धौतवस्त्रञ्चति
स्त्रकमाल। चौदजोड। मंकोगुणमाल। एङ्गांउपकरणञ्चति
राविस्त्वारोत्सेविविधत्रकार। ॥८॥ षाजांमोदकदेवरचंग
कारणीस्त्रहोलांञ्चति हिस्त्ररंग। अवरसरसञ्चाणोपक्षवान। ॥९॥

चौद्चौद्दो वो सुजाए॥१७॥ ज्ञात दालि घृत व्यंजन सारा पूराव
उं मंडक स विसारा सो वस्त्र धाल न रोकरा चंगा विस्तारो आयणि मनि
रंगि॥१८॥ नालि केरबा जोरां सोरा केलो जंबार नारंग फारा दप्ति मङ्गा
बफण स सविसाला बजुर अंगों ली बृहुण माला॥१९॥ एफल अदि
अनेक फल जाणि विस्तारो त द्विषु रख बोए जिन वर न वनि शांति कि
करो चंगा महान्नि छेक आयणि मनरंगि॥२०॥ चौदू कटका आंगो न ले
सोरा अर खंड त एण सुगंध अपरा छिंगंध द वर प्राप्य ए सविचारा जिन
वर मुजाकरो ज्ञवतरा॥२१॥ समस्त संघ सहित सवीचारा बा ल
ए खुणो त मो ए खत सारा ज्ञाव सहित ली थोगुण माला संघ आं
नं दीयो तिहां सविसाला॥२२॥ आवक आविका हर रख अया रा तिणि
ब्रत त्वयि वली सारा अतं न नाथ स्वामी क निचंगा अनंत बतल
यो अनंगा॥२३॥ वाँद्या जिन वर त्रिनुवन तारा संफल जन्म की
यो निज का जाबा हरण सहित आव्या निज गम्भीर मर्म करि स
दंगुरु सेरन्मानि॥२४॥ अनंत बत अचरायो तिहां सारा ज्ञवि
यरण आवक अतिगुण असरा बा हरण सहित कीयो ग्रुण वंत

महोस्वधवलैमंगलजलवंतो॥१९॥ जाह्नेनिदीयोति हांमा
नवस्त्रान्नरणदव्यकहुदंनादालौदिगयोजाह्नएतरोजाए
पाम्योतेहतिहांस्तरवष्टी॥२०॥ आवककबोलिमधुरावाणि। जाह्न
एवतित्रमीयसमानातह्नेसाधमीहृवात्रस्तवेगात्तस्तपरि मी
हच्चम्हनेत्रजंग॥२०॥ इहांस्तरवेरहोगुणवंतोपात्रहृवातहृजय
वंतातस्तपसादेत्रम्हनिसारा। एजातयाम्योत्रिलुवनतार॥२१॥ तव
बास्तराकोलिसविंचार। मरुतरोंगमिजाउगुणधर। महिमादे
षाडुजेनधर्मतरो। सज्जनतोकञ्चगतित्रापणो॥२२॥ अतवका
स्तुवल॥ तिहांसांसाधर्मतरोकरुविस्तार। इमकहोनिसरियोगुण
वंत। अयणिगा मित्राच्चामाहंत॥२३॥ स्तुललितजाह्नएदीर्घो
अतिचंग। जाह्नएसहीतअतिनुक्तग। वस्त्रान्नरात्रतित्रयारात्म
क्षमीतरोनविलालियार॥२४॥ तेदेषीसज्जनत्रानंदाकाध्योध
मर्मतरोतिहांकंद। राजात्राचंन्पोत्रयार। तोकबहुतवकरिवि
चार॥२५॥ एवाह्नएहोतोअतिदीन। धनकरावस्त्ररहातगुण
हान। एवडीमहिमायामीशणित्राज। कवणदेवहुर्गोएहका

ज्॥२६॥ तवराजापूछिगुणाधार्तकहोबाह्यात्तसेजयवंता॥
कवराधरमकोयोन्तसेसारातेव्रह्मनिकहोसविचार॥२७॥ अ
नंतैनाथस्वामीजिनदेवासुरनररवेघरकरेतससेवातेस्वामी
ज्ञेटीअत्रस्येचंगात्रसुन्नेत्तकरमतत्तोहृवोतिहांचंग॥२८॥ अनंत
वरतदीयोमुखसारातेव्रस्येबेहृजेणात्मायोगुणाधरावलाश्चा
वकेलीयोगुणावंतासाध्येत्राचरियोजयवंता॥२९॥ समकित
इशानश्चावकवत्सारातियाम्योमिनिज्ञवनतारजिनधर्मपाप्यो
स्सविचारात्तिणिहृंहृवोजयवंता॥गुणमात्मा॥३०॥ हृहृ॥ तवराजे
मनिहरयोग्यो। अनेदत्रिंगनमायातेबाह्यागुरुष्यापीयो। त्वा
गोतेहतरोपाय॥३॥ जिनधर्मत्वायोनीरमत्वा। अश्चावकहृवो
गुणाधर। अवरसंकोष्यात्रतिधरण। नवियएतिहांस्सविचार।
॥३॥ नासहेलको॥ अनंततत्तणोऽत्तसारात्माधोतिन्देहृत्वातिरा
मत्वोहृलि। सयलसज्जनमिलीचंग। कीधोतिहांत्रतिसुहेजहे
हेलि॥४॥ वोदवरसंतरोसारात्राचरियोतिन्देत्रतिसु-त्रो-रे
पछिजुलवृणोचंग। कीधोगुणवंतनावजड्योहेति

ए हवो जय वंता धर करणा पार न पौ माय हेति। पुत्र हवो बहु चंगा
जसकीरति व बाणा इ हेति॥३॥ पछि साध्यो काल अंत ए सल
लोधो निरमलो हेति। ए मोकार माहा मंत्र। जपतां स माधि मर
ए काया हेति॥४॥ देवतो कहवो देव। सो धर्मस्वर्ग सो हाम
ए हेति। तिहां लोग विसो रव्य महंत। देविय सहि तते जा मणो
हेति॥५॥ पूजि जिन वर याय। स मकि तयाते निरमलो हेति। जि
न बासन उद्योत। करिय देवते ऊजतो है॥६॥ शी वरत त ए प
र जाव। बाल ए देवा द्वानि रमलो हेति। ब्रीत ऊय नी बहु सा
र। जिन वर पूजि ए सुहजतो हेति॥७॥ तिहां घकोचवी करो सा
र। राजा हवो ए हरु वडो हेति। अनंत वरत फलि चंग। जैन धरम
जा विजया हेति॥८॥ तेबाल ए तए जाव। नारुं बोधी तिहां अ
कोचवी हेति। आमतां तए सार। अनुक के मिहर ला विजडी हेति
॥९॥ मोहत ए यर जाव। यटरा ए हरु ते दते ए हेति। रिहिव
हिअ पार। किम कहु महि माते हत ए हेति॥१०॥ कोतीन दर

सुन्वेगोराजकरेतेउजलीहेलिनिहांथेकोअग्रांव्योआजा।समव
सरएमांहिनिरमलोहेलि॥१४॥ एहधरमत्तरोफलसार।तस्मे
दृष्ट्योराजमुझकहिहेलि।तिहलणीएदञ्चवतास्त्राम्भिकद्या
अणिकतम्भिकंन्हिहेलि॥१५॥ मिहलेहोवलीसोरासंयमले
संरुवडोहेलि।ध्यानबलेकम्भिछेदिकेवलीहोसेमाहिमाजडो।
हेलि॥१६॥ अव्यज्ञेकजात्त्रसंबोधियछिमुगतिहिजाइसेहेलि।
अवचलसोरवरमाहत।अन्तकालतिहांलहेलि॥१७॥ आम
तीराएजाए।तप्रबलिअतिनिरमलोहेलि।छेदाव्यस्त्रालिंग
ध्यानबलिसुएसुहिजलाहेलि॥१८॥ सिल्लमिंस्वर्गवत्ता
सदेवहोसिअतिसुवडोहेलि।मनुष्यजनमलहोसाराव्य
वित्तखराजहोसिसुरिविजयोहेलि॥१९॥ अन्तेतवरतंत्रितिसा
राफलस्तराणान्तविद्युतिहांहेलि।हस्तवृहवोअपार।अणिक
रोजाज्ञानेदीयोहेलि॥२०॥ अधर्मजावउत्तरगो।अणिकहोजामनि
घरियोहेलि।विजयसेनन्दपर्वेगोन्नोवैसंहितविनयेकरोहेलि
॥२१॥ आएवानिजघरिचंगावाच्छल्यकीयोतिगोअति-

प्रीतियनीत्रनंग। अंगस्वद्गोमैकतंतरोहेति॥१८॥ पच्छे
गंयानिजगम। जिनवंरस्वामीयमनिधरिहेति। सुरवनोगविश्व
तिद्योराधरमउपरिनावबहूकराहेति॥२०॥ वस्तु॥ अनंत
जिनेसरअनंतजिनेसरपाद्यवरामेवि। रासकायोमिस्व
द्गो। अनंतवरतकेशोसारमनोहरणुरावरणाव्यामित्रिय
एगा। नावधरमनमांहिनिरमलाए। रासजेयठेसुंरांमनिधर
निरमलनाव। बहुजणादासइणिपरिलंगोतेहनिस्त्रिव
पुरिगम। तेहनिसीवपुरिगम॥३॥ आ॥ इति अनंतना
यद्वहराससमाप्तः॥ श्ल॥

अनंतनाथनीपूजा॥४॥ विमलगंधसुवासीतसारया। वस्तुहत्त
रथिनिस्तुधारया। सकलदोषहरंटघनेष्वरं। प्रविद्यजेनतनाकिनं
रेष्वरं। उद्गांशीव्वष्टतीर्थेकराया। जल॥५॥ सकलतापहरैः। सु
रवदायकै। रस्तुरुकुंकुममिश्रितचंदनैः। सकलदोषहरंट
घनेष्वरं। प्रविजजेनतनाकिनरंष्वरं। गंधं॥६॥ कमलवाससुमि

श्रितं दुलैः। द्विविलमौकि करा शिसमा न कैः। सकलदोषहरं ह
षन्नेष्वरं प्रवीयजैनतना किनरेष्वरे॥३॥ अत्रकृता॥ दुरुस्तु मंगलत
जाति सुचंपकैः वाकुलयाटलैङ्कुंदसरोकूहैः।। सकलदोषहरं
वृषन्नेष्वरं प्रवियजैनतना किनरेष्वरे॥४॥ पुष्ट्यं॥ दृतस्तु मिश्रि
तमोदकरवज्जकैः।। सकललोकप्रमोदकरैयरै। सकलदोषह
रं वृषन्नेष्वरं प्रवियजैनतना किनरेष्वरे॥५॥ कनककांतिसुन्ना
सितदोपकै। मरणिमरयेदिवंविष्वप्रकाशकैः।। सकलदोषहरं वृष
न्नेष्वरं प्रवियजैनतना किनरेष्वरे॥६॥ धौयं॥ अंगूरुचंदनमिश्रित
धूपकैः। सकलकर्मविदाहनदक्षकैः। सकलदोषहरं वृषन्नेष्व
रं प्रवियजैनतना किनरेष्वरे॥७॥ धूयं। रुचकदातिमाफ
लमुंचकैः॥। क्रमुकनारिगतिं बुकसंतफलैः।। सकलदोषह
रं वृषन्नेष्वरं प्रवियजैनतना किनरेष्वरो॥८॥ फले॥ सुंगौथ
पुष्ट्याहृततोयधूयकैः। नेवेवदोपैः करसंतफलैष्वरित्रां
तिदासेनसुशर्मव्रास्तयो। सुपूज्यतेआजिनयादयं कृज॥९॥

॥त्रिष्ठी॥ त्रिष्ठं जम्मा लौ॥ जयं त्रिष्ठं सजि ने श्वरं महा वर मे
श्वरा इ श्वरगुणा गणा मध्यसद्बूनं। जयान मिति स्तु रा स्तुर स
कल स्तुरवा करा। जया जिन जनता मध्य हरं॥ घना॥ जय
आदि जिन द विकाल रुप्य। जय पृष्ठ। जितचंद्र स्तुरेद न्त्रप॥
जय ना जिन रे श्वर दुत्र सार। जय मृह देवा सुत धर्म कारा॥
थ। जय त्रिष्ठ मध्यर्म त्रिका रा वीर। जय त्रिष्ठ मृह प्रथ मध्यर्म
जय स्त्रेवत व्यंतर नाथ राय। जय न मिति स्तुरवा कर ना नुराय॥
॥ जय इश्वान रुप जय रा मृह रुप्य। जय चंद्र वदन त्रकलं करुप्य॥
जय चंद्र दया कर चंद्र दं स। जय त्रिका टित स्त्रै न कर चास वंग॥
॥ ३॥ जय त्रिष्ठ मृह जाप्ति त्रिष्ठ मृह। जय त्रिष्ठ मृह तीव्र वृष्टि
य मधीश्वा। जय गण धरय तिपति सैव पाद। जय जल दं संज
लधर दिव्य नाद।॥ धा॥ जय पाप ति मिर हर पूर्ण चंद्र। जय दीष नि
वारणा आदि जिन द। जय त्रिष्ठ मृह तीर्थ कर त्रिष्ठ मृह देव। जय प
रम पुरुष कल त्रिष्ठ बुध सैव।॥ द्व॥ घना॥ जय जिन सार। दृश्यन

धरो। सारं केवल बोधमयो। वेंदे नवतारो। रहितसु सारं क्रांति
दा सञ्चात्मक तसु दयो॥ अर्थी॥ इति अदिना घृजा॥ विमलं गं
धसु वासित सारया। वरं सुक्षीर धिनार सुधरया॥ अजित दे
व पतिजयदायकं। वियजे जिनयं सुखदायकं॥ ३॥ उंडां उंजि
त तीर्थी कराय जलं॥ ऐवं अष्टदले॥ अथ जयमाला॥ जय अजि
त जिने अश्वरा सकल दुरित हर॥ प्रतिक्रीष्णित विनुवन तिकं॥
जय ज्ञान दिवाकरं धर्मै सकल सुखा कर॥ धर्मै मयी कृत न्वसि
वलयो॥ घृता॥ जय अजित जिने अश्वरा अजित नाथ॥ प्रति क्रीष्णित
बहू जय नवनाथ॥ जय अजित शशुभु सुतधीर धीर॥ जय विजय से
ना सुतवीरं वीर॥ ४॥ जय दे मवर्णी वर सारकाय॥ जय साढां
चारसि धरुव काय॥ जय बहूतरी प्रसवलक्षणाय॥ जय से
वित सुरनर इंद्र राय॥ ५॥ जय से विष्णु तक सकले जाय॥
तुहसे विव्यं तर नाथ राय॥ उहना मिविं घन विनाशाया॥
६॥ जय सकल विदशाय तिवद्युया दा॥ जय जलधरि न

नंदगंत्तीरनाद। उहनामियासिकलसिद्धि। उहनामियामिरज
रिद्धि॥६॥ उहनामियाहाफणिहृदयहार। उजनामिरयगारिद्धि
र। उजनामिनवेनिधिहोइसार। उहनामिसागरतरएतार॥७॥
उहनामिशाकिनीन्त्रतजाए। उहनामिनिर्मलकाएछाए। उ
हनामिसेविंसकलन्त्रय। उहनामियामिरच्छरुय॥८॥ क्रृष्ण
आजितजिनंदो। नयनानंदो। चंदोसकलन्त्रवनमंडो। जयद्वि
ताय। जिनंदो। मदनविकंदो। नंदोजगदानेदकर॥९॥ क्रृष्ण॥९॥
तिक्रजितनाएपूजा॥ विमलगंधसुवासितसारया। वरसुवा
रधिसीरसुधरय॥

उक्तीशीसंनवनाएतीर्थकराए। जले॥१॥ क्रृ
ष्णजयमाल॥

विस्तरगोधसुवासितसारया वरसुह्नारथि नीरसुधारया।
त्रिविष्णजेजिनयंत्रन्निनंदने। सकलयेकदरेयति वंदनं उं
द्दीश्रित्रन्निनंदनतीर्थकराया। जत्वा॥१॥ त्रिव्यजयमाला। त्र
न्निनंदनस्वामीमोहसुगामिनासियास्तिरसुहुचरणनमु
उत्तिचुवननंदा। नयनानेहो। जयमालकरीन्नवदुरवृण्ड
मुं। घञ्जा॥। जयनगरीत्रयोधाधिक्रौशा। जयव्योमचंद्रवरा
यशा। जयराणीसिद्धारथदेवीसार। जयसेवकरेवहुंदेवना
॥२॥। जयमाघमाससुनष्टुक्यहो। जयगर्नमाहोस्तवष्टु
दान। जयजन्मकल्पाणीकसुष्टवरवाणि। जयमाहाष्टुदिकार
सिवषाणि॥३॥। जयदेस्तवरण। जन्मदहसार। जयसाढोति
ब्लसिंधनुषपार। जययेवासपूरवत्तक्षया। जयसेविनरप
तिषुकटराय॥४॥। जयमाघमाससुष्टुदिक्रामेकार। जयबार
सिदिन्यहुंतपसार। जयपोषमाससुष्टुदिपक्षचंग। जयत्रक

टिंतके वलज्ञानरंग॥५॥जयसमवेसरएबहुत्तरारज
यगंणधरएकस्मीतिन्नसाराजयतिन्नत्वाययतिसेव्याद॥
जयमेघधनिसमादव्यनादशहि।जयके वलिसोलंसहस्रसारा
जयत्रगोरेशतत्रविधिंभराजयतिन्नसहस्रसुतिन्नत्वायाज
यषउत्त्रावगएनीसत्यनाथा॥७॥जयतिन्नत्वायश्रावकतत्रतिष्ठेग॥ज
यपांचलाषश्राविकामनिरंग॥जयवैशाष्टुदिष्टुनंदा।जयमो
कगयत्रनिनंदजिनंदा॥८॥घर्त्ता॥त्रनिनंदनदेवह।सुरक्तनसैव
दानासियजन्मजरामरणो।जयद्यमीसुदाता।त्रिन्तुवनत्रातांशं
तिदासयतिसेवतचरणो॥त्रर्थी॥स्त्रियनिनंदनसूजा॥९॥वि
मलगंधसुवासितसारया।वरसुद्धीस्थिनारसुधरया।सुम
तिनाथजिनंद्रथेजेसदा।सुमतिसौरवकरंशिवदेमुद्दार्ढङ्गं
आसुमतिनीर्थकराया।जल्लो॥एवंगंधादि॥त्रघजयसूला।
जयसुमूतिनिनंदा।परमपवित्रोवंदित्रिन्तुवन्त्राति कंरोजे
यउंचैगौत्रोतारएयोत्रो।स्थिरवित्रोमुनि दुरेवंहरए॥ त्रिध

लोकवेतासाहाकर्मन्नेत्यावत्तीकामजेताक्षायद्वचेता।
अनंतानुनेतासदाज्ञानेता।साहाक्रोधत्तीमाहान्वत्रात्॥
२॥मुनिनाथसेवेजगद्व्यपादं।विश्वाकविमीढ़महादिव्यनादं
माहाव्रज्ञनाराचबद्धश्वरीरं।यजेदेवदेवेमहाधीरवीरं॥३॥महासे
रुर्गीर्णेगतिसारस्नानं।परंदेवदेवेतत्मानमानं।सुरनाथविष्णु
तिसेव्यमानोयरंज्ञानवैराग्ये शुक्लध्यानं॥४॥परंकर्मनाशोङ्गवं
दिव्यबोधं।परंदिव्यबोधंसदाबुद्धिशुभि।सदाबुद्धिदात्रासदासि
नेता।सदात्मेकपाता।सदासिद्धिनर्ता॥५॥परंहेमवस्त्रारं
सुरुपं।नमत्रदेवदेवेदनगेऽनुयज्वलत्रज्योतिस्यंमहानिर्वि
कल्पं।हरन्मध्यमध्येशकेदर्थदयौ॥६॥घत्ता।जयवंदेदेवसुरत्र
तसेवं।दुमतिजिनयतियतिमहिते।नुतगएधरदेवं।वरण
सुसेवौ।शातिदासज्जयतिमहितं॥७॥इति सुमतिनाथपू
जा॥८॥।विमलगंधसुवासितसारया।वंरसुकौरद्विनोर

मुधरया क मलतं छन्नपद्म प्रज्ञेष्वरां यति पंतित्रयजे जगदा
शरां उँड़ों श्रीपद्मवनतीर्थीकरायजलं ॥ एवं संशदि ॥ अथ
जयं माला । जयपरमतदरणां मुनिमनहरणां यतिवरसर
णां मदहरणां जयन्नवन्नयहरणां नवजलतरणां पद्मप्र
ज्ञजिन्नसुखकरणां ॥ द्यत्वा ॥ १ ॥ जयसमवसरणसुसहित
नं मो । जयकर्मकत्वे क मलतरहितनमो । जयकमलवदन
जिन्देवनमो । जयकमलसुलो छन्देवनमो ॥ २ ॥ जयक
मलप्रज्ञजिन्नगाथनमो । जयमंददावनलयाघनमो । ज
यधरणमदिपतिस्तुतनमो । जयसुशीमादेवीषुत्रनमो ॥ ३ ॥
जयकमलवरणजिन्गात्रनमो । जयपरमयवित्रसुपा
त्रनमो । जयहेमकमलसंभारनमो । जयन्नवजलनिधिग
तयारनमो ॥ ४ ॥ जयसकलगुणकरवीरनमो । जयन्निष्वर
लधानसुधीरनमो । जयन्तियतिसेवितपादनमो । ज
लधरधानिसमनादनमो ॥ ५ ॥ जयज्ञानयद्ये

जयरहितकालुषविंतंद्वन्मो। जयन्नवंतयसंततीहरणानमो।
जयपरमजरित्रसुचरणानमो॥४॥ जयजगदानंदन। पाप
विन्नंजना। यतिपतिरेजना। कमलजिने। जयपरमनिकामें। य
तिपतिदासा। शाँतिदासज्ज्वलुतचरण॥५॥ अर्था। इति मीय
झज्जन्मृजा॥६॥ विमलमंघसुवाश्रितसारथा। वरसुक्षार
यिनीरसुधरथा। न्नवंदरेनतनागनरेक्षरे। त्रविष्यजे शुचय
र्वजिनेश्वरो। उंड़ोश्चायाश्वेजिनेश्वरं॥७॥ अथज्जमाला।
जयसुपाश्वेजिनेश्वरजगयरमेश्वर। यरमध्याननिश्चल
धरणे। जयमदनविरवंडनपापविन्नंजन। दुःकरशाल्यत्रय
हरणे॥८॥ जयधर्मप्रकासनदेवनमो। जयगण्डाहु
निर्मितसेवनमो। जयपरमहर्वंडनवीरनमो। जयज्ञान
सुधारसधीरनमो॥९॥ जयधर्मसरोजसुस्तरनमो। जयनि
र्मितकर्मविधरनमो। जयन्नवंतव्यंतरवररणाजनमो। जयचंड
दिक्षाधरेशजनमो॥१०॥ जयमुनिवरणएवरइसनमो। जय

नरपतियतिवरथीरनमो।जयनाशित्प्रेदवश्चरनमो।जय
पापतिमंरदरस्त्ररनमो॥६॥जयनिर्मलनिर्ज्ञेयदंसनमो।
जयप्रकटीक्ष्मस्त्रोसंसनमो।जयसुप्रतिष्ठपतितातनमो।
जयप्रथवीसेनप्रतिसातनमो॥५॥जयक्रोधरक्षातजितराजनमो।
जयद्वेषदहितमतिजाजनमो।जयकेवलंचिन्मयिंडनमो।ज
यमदनविमदनिदंजनमो॥६॥घवा॥जयकेवलबोधंशुद्धवि
शुद्धं।वंदेश्चाशुक्तपार्थजिनं।जयमुंगतिनिवासाललितस्तु
नासो॥शोतादासञ्जस्यतीमहातो॥त्र्यं॥७॥द्वितिश्रादुपा
र्थनाथपुंजाऽछ॥विमलगंधसुवासितसारया॥वरसुहृ
रथिनीरसुधारया॥त्र्यविद्यजेवरचंद्रप्रनेश्चूरं।नमित
भिदन्नोनाथनरेश्वरं।र्द्वं॥श्रीवंडप्रनतीर्थकरायजवे
एवंगंधसदि॥त्र्यथजयमाला॥गत्वकम्मकलंकंरहि त
कलंकं।विद्यानंदंचंदंकरं।जयंचंद्रप्र

रेसं। जगदानं दंशु च गांगं॥ घट्टा॥ जयसकल सुरनमित
याद। जयसकल छंवनपति वंघपाद। जयसकल छति पति से
व्यपाद। जयसकल विद्याधर पूज्यपाद॥ ५॥ जयचेदसु लं हन्त्र
इनाथ। जयचंद्र दिवाकर से व्यनाथ। जयचंद्र सरिसु योगीनाथ।
जयचंद्र र्षीन तथोगीनाथ॥ ६॥ जयमुनिजनन्त्र घणरहि तदोष
जयत्रिन्त्रवन मोहन रहि तरोष। जयनारपति रंजन रहि तरोष॥ ज
यपरमतनं जनरहि तनोग॥ ७॥ जयत्रिन्त्रवन तिल कंसु ज्ञोति
रुप। जयपरमनिरंजन ज्ञानरुप। जयमानरहि तपति से व्यमान
जयप्रातिहार्यपति सोन्यमान॥ ८॥ जयचेदपूरिश्चरपरमशश
जयत्रिन्त्रवन लोबन सकल धीश। जयपरमषु रुष विनष्ट
कोध। जयसकल ब्रकारा सकल बोध॥ ९॥ जयपरमच
रित्रं। त्रिन्त्रवन त्रेत्रं। सकल विज्ञासकज्ञानमयं। जयचेदजि
तेज्ञां। नमितसुरे त्रां। त्रां। तिदास ब्रह्मज्ञामनद्वां॥ १०॥ अर्धीष्ठति
चंद्रमन्नपूजा॥ विमलं गंधसुवासितसारथा। वरसुकी

र्धिनौर सुधारया। कुसुं मंदंतजिने श्रवणीधां। प्रविश्य जेव
रनव्य सुमोक्तदेः॥ उँझांशी पुष्पदंत तोर्येकराया॥ जलं॥ एवंगं
धमदि॥ त्रप्यजयमाला॥ जयन्तवज्ञयहरणं॥ शिवसुखकर
एं॥ पुष्पदंतजिनं पतिचरणं॥ सुसमतिकरणं॥ यतियतिसर
एं॥ संस्त्रिविमिलवजलतरएं॥ धव्वा॥ विकां मंदं विदो सदं ह
तापदो सुखास्यदो सुनावदो। कुतामंदं निशासदं॥ हरक्षदं
सुसम्भदो। श्रस्वर्गादो। सुमोक्तदं विदास्यदो॥ नजामितं सुख
न्यतं॥ सुपुष्पदंतदेवका॥॥॥ शिवं करं शुज्जहरं निरंतरं॥ शुभं
करं॥ निरबरं॥ शुज्जकरं॥ जिने श्वरं रमाकरं वराननं॥ कजा
ननं॥ शुज्जननं॥ रमाननं॥॥ ३॥ सुनक्रिदो॥ सुमुक्रिदो॥ प्रसुयकं सु
स्यकं॥ निरामकं॥ विरामकं॥ विरोगकं॥ विज्ञेशकं॥ सुदीपकं॥ शि
सुजीपकं॥ सुन्तपकं॥ निरुपकं॥ नजामि॥ धा॥ सुरांकिना सुश्रांकि
ना विजुकिना॥ सुहांकिना॥ वियावाना यिश्रांचिनी सव्वा यिनी॥ वि
काचिनी विदेशी तात्र कोपता विमान्यता॥ कृयंगता॥ नजामि॥

निरामयों कंलामयों वरालयें हतादयों सुरत्रयों गतामयों नि
रात्रयों परासयों मदाबत्ते सदाकलं। चित्रामत्ते। निराकृतं
नजामि॥५॥ घत्ता॥ जयशम्भुराहितों दोषातीतों। वित्तमितं
सा जिन्दरपं जयपुरायपवीतं। सहितसुगीतं। पुष्ट्यदेतयति
वरगणायों॥६॥ इतिश्रीपुष्ट्यदेतपूजा॥। विमलगंधसु
वासितसारया। वरसुक्षीरधिनीरसु धरया। विद्यजिजि
न्द्रीतलजायकं। सकलभोह मादानलपायकं। उद्गीष्मा
इतलतीर्थकराय॥७॥ एवं अद्वित्रघ्यजयमात्वा॥
जयशातलदेवं सुरक्षतसेवं जन्मन्त्रविकलपत्रमितिं जयं
गतपरज्ञावं। चिन्मयनावं। केवलज्ञावं सज्जाजीतों॥८॥ नि
रामयनिन्दिनिर्मलहंस। सदामलकेवलचिन्मयवंश। सुस्व
र्गजदेवकरिक्कहसेवा। सुपूजोनविद्यए इतलदेवं॥९॥ रात
तनमायनन्त्रवणकोवनतरसनन्तीरुनचित्तमोह। नलोनन
द्वीनन्त्रोवनदेव। सुपूजा॥१०॥ नदेवानवेक्रानरात्रनर्वदा। नमो

दनरोदनमीथुंतनस्वेदनक्रीउनिरितनकामनासेवासुपू॥
॥धानयात्रवयारनखेटनगामानपूत्रनमीत्रनन्यायतगत्ताने
जेहनहटनकेत्रनकेव॥सुपू॥पाँतदासनरकडगदेगंबररुपा
वनेगनरोगसुज्ञानस्वरूपानजन्मजरान्विषादनचेवासु
पू॥ही॥घञ्चा॥जयशोतलचंद्राज्ञानसुचंद्रासुरचंद्राज्ञितसञ्च
रणोजयंत्रितुवनेनाथोगीसुनाथोशोतिदासब्रह्मशुचनकरण
॥७॥अर्थे॥इतिश्लीशीतलनाधपूजा॥विष्णुलंगंधसुवाप्तिनमार
यावरसुक्तीरयिनीरसुधमरया।प्रवियाजेवरविष्णुसुनंदनोन
वहरंवरगंडकद्योचनां।तेज्ञीश्चयेयासतीर्थकरावा।जलां॥स्वेगं
धमदि॥अथजयमाला॥।वंदेसुक्तियतिंजिनेंडंविष्णुलंदेवेद्वृ
द्वसुतं।अत्येवंसजिनदेवंवोधसुवरांसंसारजारंतरं।मित्राकंद्रवि
नासंनैकंचउरांनेंदादिदेवोङ्गवोवद्येबोधेकरांसुक्तासुक्तु
रां।अत्येयासंजयमालिकं॥घञ्चा॥९॥जयन्वन्वेन्वद्यहरणांन
वेजलस्त्रैरणोत्तरंवरसुरवेकरणोजयानविग

हनं।मानविद हनं।त्रायन्समत्तामयधरणा॥१॥जयंयरमयबित्रेति
नुवननेत्रं।वित्रेचारित्राचरणं।जयत्रिनुवनदासंदव्यसुन्नासं
नव्यमीमित्योकरणे॥२॥जयत्रिनुवनवेदं।वर्षितवंडं।वंडद्यम्भ
पलोधीनं।जयज्ञानसुन्नासंसुरक्ततगावं॥३॥जयसुधस्वरुपंज्ञो
नसरुपंनुपंनिनुवननवानो।जयजयजगदीक्षां।त्रिनुवनश्चां॥
इक्षांयोगीसमुहानं॥४॥जयसदनविदेंडहिमकरउडं।बंडमोह
प्रवेदो।नां।गतकम्भकलंके।रहितकलंके।अकलंकजिनत्रे
ठांसं॥५॥सकलगुणसमुदंकिकलज्ञानवेदो।कतसकलसूला
वं।देवदेवेदसेव्यं।सकलगुणगणेडं।मोहध्यंतेदिनंडं।नमितन्त्रति
तित्यांशांतिदासोयतिडं॥६॥।इतिश्चाश्रेयोसपूजा॥७॥विमलगं
धसुवस्तिसांरणो।करसुक्तारधिनीरसुधरया।यजतराम्भकारंवा
सुपूज्यकोञ्चमरसंचयनाथसुपूज्यको।उङ्गीश्चावासुपूज्यतार्थक
राया।जतं॥एवंगंशस्तदि॥ञ्चयजयमात्रा॥श्चावासुपूज्यवसुनाथ
पूज्यां।सुदेवपूज्यरवगत्तपूज्या।सुधम्भवीजो।वरंबोधवाजो।उ
नाम्भकारं।त्रएमामिनित्यं॥८॥।वंतराकिनरित्यगदेवामरा॥

तु एपत्रधनं दर्शनं ध्यानं। ज्ञानं च। वित्र चरणो। जयगता अद्वृज्य
वासु पूज्ये। क्षांति द्वास ब्रह्म सुख करए॥१०॥ अधीं॥ इति श्री वासु
पूज्य पूजा॥ विमल गंध सुवासि तसा रथा। वर सुहीर धिनी रसु
धरया। विमल बोध करं विमल श्वरो। सकल योगी प्रतिप्रद
करं। उङ्गी श्री मल तीर्थ कराया। जलं॥ एवं गंध सदि॥ अथ जयग
ता॥ जय जय विमलो। वर सुख कमलं॥ प्रमल दर्शनं ज्ञान
धरं। जय ज्ञान सुचंडो। रमित सुरेडं। लडं ज्ञानं द करे॥ घटा
॥ जय मुलि वर गणाध्यर समर्म कारे॥ जय समव सरण वर च
व्यतार॥ जय सकल स्तो निति॥ जिबंडो॥ जय प्रथम कमले
सेवेगणोद्॥१२॥ जय हि तीर्थ कमले वर गणानी सवा॥ जय
तीर्थ कमले वर स्वर्म गदि वा॥ जय चुरीर यकमले उपोति क
नारो॥ जय पंचम कमले नो मनारो॥३॥ जय चुरिकमले ना
ग सार। जय सात्त्व मेकमले स्वश्री वार॥ जय श्रावसि कमले

ज्योतिदेवाजयनवमेकमलेन्नोमदेवा॥४॥जयदश्मेकमले
नागसार।जयमनुष्यएकादश्मेयार।जयह्रादश्मेपश्चुसि
हन्नाराजयमधूकेमलेजिनन्नवत्त्वरा॥५॥जैयचासरच्छत्रसुं
पुष्पवृष्टि।जयदुदुन्निरासनयमर्मवृष्टिं।जयज्ञासंडलसुदिम
वाणीजयह्रात्राकोकसुसमीसाणी॥६॥घवा॥जयविमल
जिनंदोयापनिकंदो।नयनानंदोन्नवानं।जयमुनीगणस
हितो।यतिष्ठतिमहितो।शोतिदासब्रह्मयतिशारणं।अङ्गै
॥७॥इतिश्वाविमलनाथपूजा॥१३॥विमलगंधसुवासितस
रया।वरसुक्षीरयिनीरसुधरया।जिनवरंसुमन्ततजिनेष्व
रोसकलेकमर्महरंयजेवरं।उङ्गीश्वीत्रनंततीर्थकरा
यजलं॥एवंगंधसदि॥अथजयमाला॥जषदेवाजिनंदे
पायनिकंदं।वंद्वंत्रिनुवेनश्चास्तकरं।जयनाथअनंतं॥
श्वान्नगवंतं।वंदेसंतंसात्धरं॥१॥घवा॥ज

रत्नवं हरवारिवाशजयसकलै विमलमतिधीरधीरा जय
 ज्ञानेष्वपंचमचारधीरा जयमुण्डयोनिधिपापपारा ॥३॥ जे
 हजिन्मतयं कजसुरसुरा जयज्ञानसुधस्तस्तपूरपूरा जयं
 परमतन्त्रदंडदंडा जयसकलै विमलसुरविडपिडा ॥४॥
 इ॥ जयमोहवद्युवरहारहारा जयसकलनुवनसुरवकार
 कारा जयसकलै विबुधपतिवेद्यपादा जयसकलद्यनाघन
 दिव्यनादा ॥५॥ जयेसानविमर्दनदेवदेवा जयदिनकरहे
 मकरसेवसेवा जयपापनिकंदनपरमगात्रा जयकमल
 सुलोवनपरमपात्रा ॥६॥ जयद्यमर्मययोनिधिचंद्रचंद्रा ज
 यमोहविमर्दनैरहिततंदा जयजनमजरामयमरणहरणे
 जयपरमनिरंजनयरमवरणे ॥७॥ घना ॥ जयपरमजिनेत्रं
 सकलगणेत्रां इसोत्रिनुवनश्चामर्मकिरणो जे जयं चगवंतं ॥
 देवद्वनं तां तां तिदासद्वद्वामर्मकरण ॥८॥ अर्द्धा ॥ समस्तन्त्र

वायसदात्रन्त्रयात्। मनोरथीश्चैजिनधर्मनावात्। सङ्कातु
केषु त्रकलत्रलक्ष्माः। जिनेष्वां द्विकमलप्रसादात्॥। इत्याशा
वीदा। इति श्लोकं तत्र त्रुतं देवी पूजा समाप्त।। अथ अनंतं नि
विधि॥। अत्र अनंतं नाथाय नमः। जादवाशुदि॑५ उपवासं जादव
शुदि॑६ एकान्तक जादवाशु॑७ एकान्तक तएकाद्राणात थाकं
गित्रारजादेवाशु॑८॥। उपवास त्रिकालदेव पूजा दिनकर
विशुदि॑९ नविद्युमननीवगत्परात्रित्रयोदशी शुद्धि होयित्वा
वारिकोरोष्टोयरवाली निसुकिद्वयोदशी मर्दनी प्राहि
उपरिलेय काजि। न द्रुउ लुंबस्त्रित्राणि नित्राछादियते कुञ्ज
परियाली॑५ परवालिनी मंडीए। तेथाली मांहि अनंत नो यंत्रमं
डारा। तेनं हो एतो थाली मांहि सुकिद्वयोदशी नो यंत्र आवेष
ए। तेथाली मांहि चोवीषो मांडि ए। अनंत गांवि होय तेते त्रा
गलिथाली मांहि मुकीय। तेगांव पंचास्ति संस्त्रापि निपर

लीरा। मुकिंठ के द्वारा रख रहे हिए। पछि तेज्रनंतगा रिए बाँ
यिछितेग्रादिश्वरनिश्चादिदेशनीश्रनंतनाधत्वंजिनामस्तु
यनाकरोनिश्रनंतनायंत्रउपेरिमुकिजि। पछि पूजाना वि
यिउङ्गीश्रहनमः अत्रत्रवत्त्रा वत्रसंबोधं उत्रद्वान्तं नै
उङ्गीश्रहनमः॥ अत्रत्रतिष्ठतिष्ठतिष्ठरःरः स्वाहा॥ उङ्गीश्रह
नमःममसंनिहितोनवनवषट् स्वाहा सनिद्विकरणोक्ति
निपछिअष्टप्रकारोपूजाकरविजाप्य७०५ फुलजादाजिते
हनोमंत्र। उङ्गीश्रहंहेसः अनंतकेवलनिनमः एमंत्रेनए।
जाप्यदेवाअनंतनागा रिउयंरितिन्नवारपछि एण्मंत्रिउङ्गी
द्वाँहेसः अस्तवाहनेनमः। अनेनमंत्रेण सुरोन्निमुद्रां धृत्वा उत्त
मांगोर्गंधमेदकंप्रोक्ताणं क्र्यात्। तवारपछि जलगंधादिश्रारदु
विपूजाचउदरजुनु इकरावी। मांडां४॥ नैवेष्वकीजि उङ्गीक्तोङ्गौ
कः अस्त्रसिश्रात् सामंसर्वशां तिउष्टिपुष्टिसोनाप्यमायुरारोग

मैश्वर्यमष्टज्ञिः सिद्धिकुरुकुरुसर्वविद्विनाशानेत्करुकुरुस
र्वरोगामृत्युविनेशंकुरुकुरुक्षयटएणीमंत्रित्र्यंद्वत्ताराणात्वि
रपचिचतुंदद्वादिनिः। उंड़ौत्रहंसः अनेतकेवलीजगवानअ
नेतलाजनोगबायीदिवद्विकुरुकुरुस्वाहा॥॥ एणीमंत्रीयंत्रब
परिगारिछितेलाज्ञि। पछित्र्यष्टप्रकारीपूजाक्षद्वजुज्ञशपचि
लएनीपिरिकाप्जिपछित्र्यरघमंत्रीत्र्यरघउत्तारात्रिआउंड़ौ
हंसअनेतकेवलीजगवान् धर्मश्चाबलयुरारोग्याज्ञिर्व
द्विकुरुकुरुस्वाहा॥॥ रक्षोपासणेष्ठनमंत्राउंड़ौत्रहंसंवेस
र्मबंधनविनामुक्तायनमः स्वाहा॥॥ एंजे लेंदांन प्रोक्लएमंत्र
पछिमांजाधमप्यगदुष्टनित्रापीएतेहनेमंत्रा॥ उंड़ौत्रनेतफल
ददा वस्त्रेत्रनेतकेवलीजगवान् स्वाहा॥॥ पछिमांजालितेमंत्र
नएतेमंत्रउंड़ौद्यर्मश्चाबलात्तरारोग्यनोक्तवदोना
तूपछिजिमालनणिए॥ अनेतकांनितथाब्बोदितथात्रो
गलीएराखबुबनकरितारेचउदवरसरणीपिरिकंरुं

पैषित्तु वर्णु करु दुःख वरां नीरा किनो हिं तो ब्रत का जि
वि संहुए। अनंत नीरा गिरि १४ करि छिते हना नं मः अनंत सोना
नो ते यारु पानो त यासु त्रनो करा वे॥॥इति श्री उत्तर ने त पूजा
संपूर्ण॥॥श्री॥॥संवंत १७२८ वरणी जादव वदि ११ रवै श्रमेद
परो। श्री उदाय पुर श्री मृगल संघे श्री रोन्नव ना यचे त्यादि। न
द्वारका श्रादि वेद का विस्त दान्नाये॥गठी अउ का सुत क
त्यारा जी लरिवतो श्री श्री कुरुया सुत मि॥श्री कल्याण नु यात॥

॥ उत्तमः सिद्धेन्यः ॥ सकलं नवन विरच्या मत्ता तत्ता ॥
ज्ञिजित्तजाणुमसुदेवी सुन्नगा नवरा मनवणा ध्या ॥
एं धन्दुष्टुं चासिं पांच अजो ध्या नगरा करा हाति ॥ ध
रवचोरा सीला ष्ट्रिया यत्तमसुन्न दिनि ॥ तो न्हु न
वृष्टन्सोहिं धयु ॥ दीक्षा वद वृक्ष ना ॥ ॥ ध्या ध्या ॥
धर्मस्त्रियरा के दिं श्रिदिनि न के लाय मिद्वा ॥
एग्यि ॥ २ ॥

त्वं वज्रता ते जित्तमत्तमोहिं इन्द्रन्द्रक्ष नवा ॥
रुद्रायमाय विजया मन्त्रमोहिं इन्द्रप्रथा ॥
चारवणोमोवरा दवरा ॥ इन्द्र ॥ इन्द्र ॥
गजचाया जित्तमर्णि न ग ॥ इन्द्र ॥ इन्द्र ॥
इमामस्त्रियणोदीक्षा न ॥ इन्द्र ॥ इन्द्र ॥
पिंचिकद्वा मन्त्र ॥ इन्द्र ॥ इन्द्र ॥

त्यजगमा हितात जीता रीक हि धिं सुषेणा तसमा
त को त्यक न क मिं ल हि धि ध न ष उ चा सिंचा रमा
ल दीक्षा डु मर जि। न गरी सा वस्ती नीत्य देव पति डुं
डु निवाल्लि। लक्ष सा र शूर व अ यु कु ह्यु चरणे तु रं
ग मन्त्रि क्षधरी। मुनि धर्म न ष ए क हि संन्नवि समे
हि मुगति वरी॥३॥ पिता संबर कु ल सुधा अ जी धा
न गरी पात्ति। सीधा धी वर मा त जन मी जिन पा
त्यक टा त्ति। वां न र ला छ न चरण वरणा सी व
र्ण न रा जि। अ निन द्वन ध नु काय सा ढा मित्र।
ए परगणी जि। लक्ष यं चा स शूर व जी विप्र नु सर ल
वह दीक्षा त ए। न ए धर्म न ष ए स मदगी र ल
ही सी वर मणी विनु वन ध ए॥४॥ ध पथ मध्य सम।
दा न मे घ ए न रा जि का री। मंगला माय सु का य ध

ज्ञषसिंत्रएषधरी। हेमकांत्यधसंगनयत्रजोधा
तारहातपतसुफनीलाष्वरवच्चालिससुसार
हाचक्रवाकलाछनमसिंसदास्त्रीमत्तवात्
यक्षिंसुनिधर्मनृषणएवेवदिश्रीसुमनिस
मेदिसीवदरिं॥५७४४८वीपात्यकंहरणाधरण
राजासुखकारी। जणिंसुसीमामायपक्षवज्ज
पात्यकंहारी। लालकांत्यचिक्रपक्षवल्लदे
व्रामसुआयहानगरीकोसांबीआयचासिंचुट
सुक्षयहायलनातरुतलिंतययही॥गिरिसमे
सुइसीवम्यल्ली। सोइछठोजिनसेवियिंकदिध
दिसीवम्यल्ली। इसुप्रतिष्ठप्रगटजिन
मेनृषणचेपककली॥ इसुप्रतिष्ठप्रगटजिन
तातडुरीवाणारसीजाए॥ अथवीराणीमातवा
दिसुखअमृतवाणी॥ स्वस्तिकंलाँछनवरण

नीत्तलक्ष्मद्वयवीमहा आयुरेणाश्चिरवंडवङ्ग
दीक्षाजगदीमहा बसिंचापञ्चाप्नुमामंसारममे
दितरिं मुनिधर्मनृषणकहि सेवता सुपार्श्वस्या
मीमंगलकरि॥५॥ सेतनुत्तान्तिपारतात्तमहास
न सुरायहा लक्ष्मणामातोधनुषसोढोटसुका
यहा स्वेतवरेणशुभ्राया लाष्टुरवदशाल
धा चेद्वुरीयरसीधा ज्ञाहानहिज
ननिंबाधा॥ चेद्वचिक्कचरेणवसिनागवक्षसं
यमकह्या॥ कहिंधर्मनृषणचेद्वन्निः समेदि
सीवपदलह्या॥ एसुरनरसेवितपायतात्ता
सुयीवसुनामा॥ धनुषजंचासोमानमातम
हियन्नसोहिरामा॥ मकरचिक्कलक्ष्मद्वय
रवनगरीमाकेंद्री॥ सीतकात्प्रवक्तनागय
द्योतपसिधसुवंदी॥ नवजीवयतिबाध

लद्द

४

निं। मुग ति समेदिं वरी मुदा। मुनिधर्मनृषा
एक हि से वियिं जिन द्वय दंत द्वय द्वय सदा॥५॥
ध्यवंत रथ विसाला तात द्वद्वरथ सोहा विचुन
सुन मात कात्य पीली मन त्ता विएक द्वरव
द्वुरीन दिक कात्य गहा लोचन श्री द्वुत द्वद्वचाप
ज सत्रं गहा पला सहक संयमधर्मा॥ समेदि
द्वुद्वरण॥ मुनिधर्मनृषा एक हि से वियिं श्री
तत्त्वनाथ सीतल करण॥ ६॥ विलावीराणीराणा
स्वाता तात सोहि विलुरा जहा दिल्ली विलुरा
मात ज एप अयोद्धा स सुका जहा मिंदनाथ द्वुरीषु
धा चाप द्वह सीपरि माए हा चरणो लोचन रव
ज्ञा कोत्य पीली मुजाए हा द्वयला घनोरा सीर्ज
वीक ही॥ तिंडुक द्वहिं तप वहि॥ वरीय में द्विज

वधु। सुनिधर्मनृषण इंशी पिरिक हिं॥१॥ वसुधारा
दुजितयाय। राय वसु दृजसु नात हा। सीत्यरथनु
षत्रारीरा लालच्छवि विजया मात हा। वृषत्ताषबो
होत्यरत्ताय। महिषजे हचरणेचंक हा। पादलत्तु
क्षपवित्रा धस्यो आचरण नीमंक हा। जनमसु
गच्छचंपान ही। अहां इं इचंद्रं गिम्यत्तिं। कहिं
धर्मनृषण श्रीयवासु दृज्य। मेघिसङ्क पात्य क
गत्तिं॥२॥ बड़ित जनसरण नातना मिठ
तव मी। वृषसारलाषसु आय। माय सुख कारी
सुमी। डुरी कापी तीपवित्र काय। जे हषषी चाप
ह। चिक्क सुकरजं द्वित्तिं। धस्यो वृत्तना निपाप
ह। समवसरण चामरठत्तिं। स्वर्णविरण काय।
कही। कहिं धर्मनृषण विमत्त जिनि। समहिं
रमी वल ही॥३॥ सिहस्रन जिनता त। मिंदसम

नाजाए॥ सूर्यादिवीमात्राच्चजोध्यानगरवष्टारी॥
स्वर्णवर्णशरीराधनुषपंचामुदारी॥ चीमत्ताष्ठव
ष्ठसुच्चाया चनेतजिनमंगलकारी॥ चिक्कसहलौ
यिपलत्तचिं ब्रह्मधरि॥ चिन्तुवनपत्तिकंहिंधमा
च्छणसमेद् गिरमीवत्तहीमयणिंजाएरत्ती॥ १४
संवत्तु उद्वष्टमागचिरस्तु द्यन्तोमसुनिश्चीधम
च्छणत्तज्जिष्ठ ब्रह्मसोहनत्तिश्वितो॥ श्रीवासरा
गायनमः दुहासकलत्तव्यस्थकरमदा। श्रीनेमीजनेस्व
रश्याजडुकोलकमलभीवसयतीष्टएसुंतेहनापाय
॥ १॥ जगदंक्षज्यसरस्तोजानवाणीबुक्काट्या चवीर
लवाणीत्रायजेडुरुठोस्तुमाट्य॥ २॥ गणाधरगौतमनिज
सुंसकलकीरतोगुरुक्षीरातामयादोद्यदीनमण॥ न
वनकीरतीगंतीर॥ श्रीद्वाननुषणज्ञानीहवाओडिकी
रतीनवताराजद्वारकस्त्तचंद्रपटि स्वसतीकारतीस

बकार॥४॥ गुरु की रति गूरा गए नीधी। वाही नूषए यः ज
ग्नारा राम की रति पाति गूरु सीपदम नंदी जिकारा पा॥
एगठ पति पदन मीक हूषहूषन कथा थ्रवंद॥ हरी वंस
ग्रंथथी उधरी जो इस्त्रै सूखंधा इ॥ राज असाउरी॥ चा
लि॥ आसबदसूणो भवी अणएक साररे वीस्ता ररा जेवूजो
जन जषक हो॥ आतेमधिमेसूदरी सन जांलो रे। वाणीए
रउचो जो जन जषरह्यो॥१॥ आतेहनीदीषणदीगन्तागि
षित्ररो सून्नवेत्ररेनरएसनो सनउपमया ए। आमधिकी
जयारधसूषचंनरो। ठमंकरे जंगा सीधूष की दुवाए॥२॥ च
ढावो॥ प्रयाबत्री ससिहि स्वर्व आरजषंडिमेगदसूदेस। राज
ग्रहन गरी अनोपम जांहांधर्म प्रवेस॥३॥ पत्री वंससी रोम
एक दिश जत्रेणी कराय। नीज प्रचरुष तापथी जिण। अ
रीनमा व्यापाया रा॥ सन्नाविगंएकदीनमा नीकहि संक
केता वीपूजन गीरीमा हावीर अवासमवसरए समेता॥४॥
मात्रीनिसन्नन्ननको धोहो पंचपस्ताया अणएट्टेरा
है निचाली झोमागदराया॥५॥ हरथी वाहु न तज्जो॥ स

जीपूजाअष्टप्रकारासमवशुतीमधिज२पूजीआजनेजि
काराए॥ तवसातजसंज्ञलैसांनजोजनवरधमी॥ नवन्त्र
मणकारण्डप्रणवलीचारगतीनोममी॥ ६॥ पठिगण्डधरवी
नाव्याकदिकरोधमीसनेहाकथाप्रटूमननीकहोजिम
टालिस्थसने॥ ७॥ अहोसेणीकसांनज्ञो। कहूकथा
एवीस्तारासंज्ञलिस्थनोगवीनवन्तवीकपंसिपारा॥ ८॥
जंबून्नरथठघंरमांहिआरजघंरउदार। देसुबत्रीसंस
हिसनोएसोरुदेससुगारा॥ ९॥ तेदेसमांहिद्वारकान
गरीअतीमनोहारावीस्तारजोजननवकहोजेबाइजो
जनवारा॥ १०॥ राजग्रेरजीत्तमणंपूरमधिदीसिचंग। सी
घरउपरिसोन्नताध्वजकजसनवनवराग॥ ११॥ जेहपग
कीवीसाजवीपणीवीथीकामनोहाकाति संज्ञूतकाम्प
नामांहिदयादमदातारा॥ १२॥ हटसेणीहाटीकादीकरन्ते
नाव्यापाराव्यवहारीआबहवस्त्रवेचित्तोहोरित्ताघहजारा॥ १३॥
प्रहरुगढपाठनफरतोरत्तनीमीमीतसाराच्चारजोप
रसीघरन्ती। सोन्नान्निन्निपारा॥ १४॥ वापीऊपनदीसने

वराजलासयं नीराकमलमिदीसूर्यं ध्रुवाद्यासीतमंदसभी
रा॑॥जातीचपक के तकी।माल्न तीनि मच्छ कूद।वेज वानोनि
वोरहनी।पारी जाति अमंद॥१६॥एष्टु नी तपंक जसे वंची।जूष मी
जासूल्ना नी पसरु ओमो गरो।दमणो यूना ब्रह्म मूल्ना॑॥१७॥लिख
इजां बृजे बीरी।नारां गी सहि कारा।राज वृष रां यणी जोरी।फ
णा सफै लत्र नारा॑॥चंचू चेकनि कपी तन॥काटै सु वट साज
पी चू न वंजूल ऊ वलफै नीज।मधूक ताज तं माल्ना॑॥१८॥झाष
मंस पै ल ची लवंग क पैर के ज।क सूल्ना के सरतणा।वन मीरी
चना गर वेजा॑॥कमल अहनी मकरां द जो लूप ल जी रवंग गूज
ताह समार चको रसायि।को कीजो कूजंत॥२१॥एहवी वन वाहु
की तणी सो ज्ञान ज्ञानि पार।झार को रहनी अंसणी जंहरी पोर आ
कार॥२२॥ती हांकू रु ल धरा पती।ना वी त्रीषं न न रे सा असर ज्ञ
चर सा धी आ।साधी आराय घरे स॥२३॥राज वै ल व अनी ग
वि जाह व कूलं बरसूर।नाग से ज्यानी रद नी जिणि अनी करा
चक चूरा॑॥२४॥करि को सासूर दणी जिणि नाग नाथो हेवै न
मीजी नै पीतरा॑॥त्रात व नी सी बल देव॥२५॥तास पट राणी ह
वा व मी सुत नं माजंण।रुष मणी जंकू वती लक्ष्मण व दुर्ग एषा
णि॥२६॥से रुसी माझे री वत्नी।पद्मा वती वर नारि गंधा री एञ्च

ए सूक्तो जवि सूषु प्रदारा ॥२७॥ एक दीन तां हां दूत आयो सन्ता मां धर्मी
महायजो मीद मकहि सांता नो कुरु रुग्नं नीरा ॥२८॥ दिस कूरु जे गेल
धरणी शरणी हस्ती नाग पूरे सा ॥ रायदूर जो धन कहि सान्ता नो वातन
रेसा ॥२९॥ नां मारुष मणीर्जन्मथी हो द्यव मो पूत्रु प्रदारा ॥३०॥ तेअ मारि
जां ए जो न्ना वी सूता न्नर थारा ॥३०॥ वचो हर वो न्ना वी उदै वस्त्रु न्नूष
ए दां ना जइ कह नो जना यनि तां हां पंसी उस न्माना ॥३१॥ सत न्नो मार्य
मो कली कुञ्ज का रुष्य मणीर्जन्म आपण कहू मां पूरव पूनि पूत्र प्रसवि
जे हा ॥३२॥ तेह दूर जो धन तणी पूत्री कापरणि जां माके सपा सवी पू
त्री का सीर तणो आपि जां मा ॥३३॥ वरव हवी हवा समिपगति निविणि तेहा
चंपां वीन हवा वीय आपणि आ अरहा ॥३४॥ साधि वलन्न दिकरी करे सूष
वजय कार हो मिथ्यां न्नां मारुष मणीर्जन्म ॥ गन्ने तणी उत्यपत्य कहू सां
न्नल जो सह तेहा ॥३५॥ सेजि सूती पद्म नी प्रसमरयणी प्रसंगा देखि स्व
असो हां मणो रुष मणी मनं रां गा ॥३६॥ हसवी मनि विसी निआ का सिस
वीहा राकर तीजागी कां मी नी मन धर तीहर षष्ठ्या पा ॥३७॥

आनामरोद्धृत्याज्ञावादवानावाद्राकादाणः शारमागतापूला
वासः प्राणाराधोष्णाज्ञारागच्छालायज्ञोः इपित्यगच्छागण्णमारुः
युक्तवाग्नामस्त्रा त्याज्ञामारुलालीज्ञाग-यः स्त्रीरुद्धयव्याप्ति
द्युम्भिर्जलं त्रिपात्रः त्यादृज्ञादत्तद्युक्ताच्छ्रुदाण्णः

जात्यजा एकान्तर्वेष्मा पालनाकामरायगुमाः तदा
नवदेष्टज्ञानं रागवतोऽपादम् कांस्त्रियसूत
गपनचरकाम्भः = प्राप्ति स = प्रवक्त्राक्षरं प्रव्यज्ञाप्त
दानादाः = प्रदादाशप्तिवान्तु सत्त्वे स्त्रिय एव एव रुजमा
भृष्टुजः = पूँडी गरुस सर्वाम्भाकांस्त्रियदात्रिय
ययद्याः = लाला हरदाधमहवरा० लरुशा = प्रवक्त्राक्षरावाह
इन = प्राप्ति = रहदीमहवरा०

अस्त्रांगजायोहना भृत्यावप्तीया जीवनातः परम्पुरावयवा
उपदाकाहीः रात्रिवालीहृषीजवालीः द्यामालजीतेषु नाहीहा
भाष्टराहीमानामेलीहाः उपनीश्चर्द्धाभुर्तीपरवारहीः परम्पु
राणुष्यु उपकारातरहीः मीषुरार्द्धमानामल्लेष्वा उणगुप्त
मालताहीः परम्पुरुषमध्यमतहोएकीः प्रसीष्टलम्बलद्युमानो
दीर्घमारात्गारजराही मीरहमानामहातुष्ठा उला
च्यप्तीउपस्थराहीः परम्पुरार्द्धाभानामहरलीहृष्टः मातप
रामजीनीहीः योमादुदुआकायद्वहीउपहीः भरालीमानामेश्व
हैउपः इनाचीनागमारीलद्वमाणाः दीहीदीय उपतावरा
णाद्वमहोः राष्ट्रलमारहीद्युष्मापद्माः दीर्घमीलनोपरायद्व
मीराहमानामहातुष्टः ४१ः

॥
मार्गीगामयात्मकवदा दीनादृसत्वीकरप्रगावदा महाप्रहा
मयेत्कुरुवारीजोक्तु सतरक्तुलहान्तुवा नुनप्रक्तु अतुष्टप
तदापशीजोरुक्तुक्तीलाप्तेसगाक्तवा तनप्रक्तुक्तु तुरुणजेयेत्ता
दगादृसत्वीकरप्रगावदा महाप्रवदुवारी ॥

॥एर्पीमाउलमःलिह-गोः॥लिष्टवस्कवचोन्नन्दा सिंह
न्यग्रामतः सदा सिद्धकार्येत्।

उत्तमः सिध्येन्द्रः श्रीशांतिना एव नः प्रलोक वांगमो गेषु। निर्बिन्नो दुः
रवलोक कः। एष विज्ञापया मिवां इराणं करुणा क्षीरं। सुखलोकस्य
मोहो। इन्द्रवदि इति स्तुतः। सुखे केहेतो नामाया। तव न ज्ञानं ग्रन्थयुग
॥१७॥ अद्य मोहम् हम् हावेशा इरिल्या क्विवुन्मुखं। अनंतगुणमासे न्यास्त्वा
शुक्रास्तो लुभुद्यतः॥२८॥ नक्षयाप्नो सायमालाय। दुरं चक्रयाति रस्तु तास्त्वा
नामाषसहस्रेण। रुद्रात्मानं पुनास्त्वं॥३॥ इन्न सर्वज्ञयज्ञाहै। ताथैकत्ते
थयोगिनां। निर्बीणवस्तु लुद्वात्माकृता चाष्टित्तरैः। शतेऽप्ति॥४॥ तद्वप्य॥। इन्ने
जिन्दो इन्नराह। इन्न एषो इन्नो त्वमः। जिन्नायो इन्नपति। इन्नधियो जि
न्नाधिश्चो। इन्न स्वामी इन्नेष्वरो। इन्न नायो इन्नपति। इन्नराजा। इन्नाधि
राद्य॥५॥ इन्न प्रलुब्धितविलु। इन्न लक्ष्मी इन्नाधिन्दु॥६॥ जिन्न नेता जिन्ने
शाना। जिन्न नो जिन्न नायकः। जिन्ने दूजिन्न परिवर्णो। जिन्न देव जिन्ने शि
ता॥७॥ जिन्नाधिराजो जिन्न पो। जिन्ने शीजिन्न शास्त्रिता। जिन्नाधिनात्
यो। यो यिजिन्नाधिपति। इन्न यात्मकः॥८॥ जिन्ने चंद्रो जिन्न दित्यो। जिन्न द्यो
यो यिजिन्नाधिपति। इन्न यात्मकः॥९॥ जिन्न द्यो जिन्न
जिन्न कृजरा। जिन्ने दुर्जिन्न ध्येये रेयो। जिन्न धूर्यर्जिन्न नवरा॥१०॥ जि
न्न सिंहो जिन्नाद्वहः। जिन्न रथेनो। जिन्न वरदो। जिरहन्तजिन्न नारसं॥११॥ नि
त्वररा। जिन्न सिंहो जिन्नाद्वहः। जिन्न रथेनो। जिन्न वरदो। जिन्न तत्त्वा। जिन्न तत्त्वा
नो यो। जिन्न सादुलो। जिन्न ग्रेये। जिन्न युग्मावः। जिन्न हंडौ। जिन्न तंडौ। जिन्न तत्त्वा
जिन्न ग्राणी॥१२॥ जिन्न प्रवेकश्च जिन्न। ग्रामणी। इन्न सत्त्वमा। जिन्न प्रवहं
प्रमः। जिन्नो जिन्न पुरोगम॥१३॥ जिन्न श्रेष्ठो। जिन्न ज्ञेयो। जिन्न सुख्यो। जिन्न
यिमः। श्रीजिन्न श्चात् मजिन्नो। जिन्न वै दारकोरजिन्न॥

रजाः शुद्धैरा नि स्तमस्को जिरं जना धातिक मर्मीतकः कम्भी ममीविके
मर्मीहातया ॥१५॥ वीतरागो हुदैष्ये मनि मर्मीहोलि मर्मदोगदा द्वित प्लो निमि
मर्मो संगो निर्लयो दीतविस्मया ॥१६॥ अस्त्रप्लो निह श्रमो जन्मी । निष्ठे होति
ज्ञेये मरा उरत्पतीतो निष्ठितो निर्विष्टादस्त्रिविष्टजिता ॥१७॥ इति जित
शतं ॥१॥ सर्वज्ञः सर्वविज्ञवीद इसवीवत्तोकतः अनंतविक्रमानं
ता वीर्यो नंतसुखात्मकः ॥१८॥ अनंतसो एवो विष्टज्ञो विष्टदत्याति
लार्थदका न्यहु द्विष्टतस्त्वं हु । विष्टव्यद्वच्छुरयो वित् ॥१९॥ आनंदः प
रमानंदा सदानंदसदोदयः नित्यानंदो महानंदा परानंदः परोदयः
॥२०॥ परमोऽऽः परंतेजः परंधनपरंमदः प्रत्यज्ञो तिपरंज्ञो तिपरंज्ञ
स्त्रपरंरदः ॥२१॥ प्रत्यगात्माप्रबुद्धात्मा महात्मात्ममहोदयाः । परमा
त्माप्रशान्तात्मा परत्मात्मनिकेतनं ॥२२॥ परमेष्टीमहीष्टात्माश्रेष्टा
त्मास्त्रत्मनिष्टितव्यज्ञनिष्टो महानिष्टो निरुद्धात्माहुद्धात्मदृक ॥२३॥
एकविद्यो महाविद्यो । महाव्यज्ञयदेश्वरः । यंत्रव्यहरमयः सार्वा स
र्वविद्यो श्वरस्वन्तः ॥२४॥ अनंतधीरनंतत्मानंतशाक्तिरनंतदृक । ग्र
नंतानंतधीशक्ति । रनंतविद्यनंतमुत्ता ॥२५॥ सदाप्रकाशः सर्वार्थः ।
साह्वाकारो समग्रधीः कर्मसाहीजग्नव्यु । रलह्यात्माव्यलस्तु
ति ॥२६॥ निराकाश्चेष्टतक्यात्मा । धर्मचक्रीविदावरः । नृता त्मा
सहजज्ञोति । विष्टज्ञो तिरंतादिया ॥२७॥ केवलिकेवत्ता लोको ॥

रजाः शुद्धेऽनिस्तमस्कोजिरेजनाधातिकम्भीतकः कर्मा॒सम्भाविकै॑
म्भीहानथ्य॥१५॥ वीतरगोकुद्दैष्मन्तिम्भीहोनिम्भदीगदा॑वित्प्रोत्तिम्भे
म्भोसंगो॑निन्करोवीतविम्भया॑श्वै॥ अस्त्रप्रान्तिहृष्मैजन्मै॑निश्चेदोनि
द्गुरोमरा॑उरत्पतीतोनिश्चिंतोनिष्विष्टादस्त्रिष्टिजित्॥१६॥ इतिजित
शतां॑१॥ सर्वज्ञः सर्वविश्वर्वादद्वीसर्वावलोकतः॑अनेतविक्षेपाने
ता॑वीयोनेतसुखात्मकः॥१७॥ अतंतसोर्क्षोविश्वज्ञो॑विश्वदस्त्रालि
लार्थदका॑न्यकृद्विश्वतस्त्रहु॑विश्वचक्षुरशेवित्॥१८॥ आनन्दः॑प
रमानंदा॑सदानंदसदोदयः॑नित्यानंदोमहानंदा॑परानंदः॑यरोदयः
॥१९॥ परमोजः॑परंतेजः॑परंधनमपरंमदः॑पत्पञ्जोतिपरंज्योतिपरंज्व
स्त्रयरंरदः॥२०॥ प्रत्यगात्माप्रबुद्धात्मा॑महात्मात्ममहोदयः॥२१॥ परमा
त्माप्रशंतोत्तमा॑परत्मात्मनिकेतनंः॥२२॥ परमेष्ठीमहीष्ठात्मा॑श्रेष्ठा॑
त्मास्त्रत्मनिष्ठिताद्वज्ञनिष्ठो॑महानिष्ठो॑निरुठात्माहृठात्महृका॑२३॥
एकविद्यो॑महाविद्यो॑महाब्रह्मयदेश्वरः॑यंचब्रह्ममयः॑सार्वा॑स
र्वविद्येश्वरस्त्वन्नः॥२४॥ अनेतधीरनेतत्मानेतत्त्राक्तिरनेतद्वका॑अ
नेत्तानेतधीश्वराक्तिः॑रनेतत्त्रिदनेतमुत्त्र॥२५॥ सदाप्रकाङ्गः॑सर्वार्थिः॑
साह्वा॑कारीसमग्रधीः॑कर्मसादीजग्न्यक्षु॑रलव्यात्मावलस्ति
ति॥२६॥ निराक्षाध्येष्टतक्षात्मा॑धर्मचक्रीविदावरः॑नृत्यात्मा॑
सहजज्योतिविश्वज्योतिरंतीडिया॑२७॥ केवलिकेवला॑लोको॑

लोकालेकु दिलोकना। विविन्नकै कृत्त्वा ग्रन्ति। शरण्ये चित्प्रवै न कर्मार्दी।
विश्वनूहि श्रवण्या तमा। विश्वतो मुख्या विश्वव्यापी खयं ज्योतिरार
चित्तात्मामलप्रन्॥१२४॥ महोदयो महाबोधि महालालो महोदयर महो
प्रज्ञोगः सुगति महालोगो महाबल॥३७॥ इति शर्वज्ञशते॥२॥ यज्ञो हेति
गवो न हो महा हर्षमयवाच्छ्रितः नृतार्थिह पूरुषो नृतर्थकु त्रुपूरुष॥३
८॥ पूज्यो न द्वारक स्त्रा। नवान च नवान महान् महार्ह स्त्रयु। स्त्रीते
दीर्घयुरर्थवाक॥३९॥ अराध्यः यर माराध्यः यं चक्कल्या एष जितः॥४०॥
विश्वुहिर्गुणोदयो। वसुधराच्छ्रिता स्यदः॥३३॥ सुखमूदशीदिव्यो।
जाः सावीशो वितमात्रकः स्यादन्नगन्तः श्री पूतः गल्लेगल्लेभ्यो विश्रितः॥
॥३५॥ दिव्यो पचारो पवित्रिः परस्तनूनिक्षलं सजः सवीयजन्म पुरुषा
गो नास्त्रानुकूलं देवता॥३५॥ विश्वविज्ञात संनृति। विश्वदेवा गमाङ्गत
शर्वीस्तप्रतिष्ठं दासहस्राद्वोदगुश्ववः॥३६॥ नृत्यदैरावता साना स
वर्शकनमस्त्रकतः। हष्टुकुला मरखवाग। श्वारणार्थिमहोश्वव॥३७॥ व्यो
मविस्तरपदारह्वो। स्नानपागयिता दिराट। तिथेशमन्यदुग्ध्याच्छ्रिः। स्ना
नं बुस्त्रातवासव॥३८॥ मंभ्यं बुवृत्तेलोकयो। वज्रस्त्रिशुचिश्ववाक्त
र्थितश्चिदस्त्रो सक्तो द्युष्टे द्युष्टमासका॥३९॥ शकारब्दानं दन्ततात्राच्छ्रिति
स्मापितां विकारै दन्तत्योतपिनको। रैदपूर्णमनोरथ॥४०॥ आज्ञाधीं इक
तासेवो दिव्यस्त्रीष्टशिवो द्यमयदाह्वा द्युणाच्छ्रिपूज्यग। फल्लुकः स्वः पंतां उ
ताधिश। कुवेरनिमित्तास्त्रानः। श्रीयुग्मागीश्वराच्छ्रितावहस्त्यो ब्रह्मवि

द्विद्योयाज्योयंज्ञप्रतिःकरुधर्षायज्ञांगमस्तेयज्ञो। दविशुत्यःसुती
रः। नावेमहामहपति॒महायज्ञोयज्ञाजका॥४३॥ दयाध्योगोजग
पूजाहोजगद्वित्यदेवाधिदेवशक्राच्चोदवदेवोजगदुरुका॥४४॥ सं
द्वूतदेवसंघाच्चीः। पद्मयानोजयध्यज्ञी। न्नामंडलीचत्रः॑ कौष्ठि॒ चामरो
देवदुंडुनिग्निपा॥४५॥ वागस्त्रष्टासनब्रत्राचयराद्युष्णवृष्टिनाका। दि
क्षोमानमर्दी। संगीताहोष्टमेंगलः॥४६॥ इतियज्ञाहेत्वतो॥४७॥ तीर्थके
थ्रेसर्वीर्थीकरस्तीर्थकरःसुहकूतीर्थकर्त्तीर्थन्तर्वीतीर्थशा
नाद्यका॥४८॥ धर्मतीर्थीकरस्तीर्थीषणोतातीर्थकारकः। तर्थप्रवर्तक
थ्रीवेद्यस्तीर्थविद्यस्यकः॥४९॥ सत्यतीर्थकरस्तीर्थीशासनोष्टतिशास
॥ सत्यवाक्याधिपःसत्याशासनोष्टतिशासनः॥५०॥ स्याद्वादीव्यंगी
व्याधनिरव्याहितार्थवाक्। पुण्यवागाध्र्विग्नीमागधीयोक्तिरिंदि
॥५०॥ अनेकोतदिगोकोता। द्वातन्निर्दुर्जयोतकृता। साधीवाहप्रयत्नो
प्रतितीर्थसद्व्यवाक्॥५१॥ स्याकारध्यजवागीहा। येतवागचलोवा
अपोरुषेयवाक्। रास्तारुहवाक्। सप्तलंशिवाक्॥५२॥ अवर्णीसर्व
या। मद्यगीर्व्यक्तवर्णगः। अमोद्यवागकमवाग। वाचानेतलागवाक॥
॥५३॥ अहेतगीस्तनतगी। सत्यानुलयगः। सुगा। योजनवापगी। हीरागैर
स्तीर्थस्तवगा॥५४॥ नवेकश्चव्यगुः। सङ्कुश्चित्वगुः। परमार्थगः। प्रशांत
प्राश्चिकगुः। सुगुन्नियतकालगुः॥५५॥ सुशुतिसुशुतियाज्यः।

सुक्षमाहाकृतिः। धर्मकृतिकृतपतिः। शुद्धुद्रवीकृतकृतिः॥१८॥ ति
वाणामार्गदिग्मार्गादेशकः। सर्वमार्गदिक्का। सारस्वतपथस्तीर्थी। परमो
तमतीर्थकृत॥१९॥ देष्टावाग्मीश्वरोधर्मीश्वासकोधर्मदेशकावाण
श्वरस्त्रयीनाश्वा। स्विन्नंगीश्वागीरांपति॥२०॥ सिद्धाङ्गः। सिद्धवाग्मः। सि
द्धसिद्धेकशासन। जगत्पुसिद्धसिद्धांत। सिद्धमंत्रसुसिद्धवाक्॥२१॥
शुचिश्ववानिक्रोक्ति। स्तंत्रकुच्चायश्वकृत। महिष्ववाग्महोनाद
कवाणोदुंदुलिस्त्रन॥२२॥ इतितीर्थकृष्णतं॥२३॥ नाथपतिपरिवृद्धः। स्व
मीनज्ञाविन्दुः। प्रन्तु। इश्वरोधाश्वरोधाश्वो। धीश्वानोधीश्वितेश्विता॥२४॥ ई
शोधिपतिरीश्वान। इन्द्रोधीपाधिन्दुः। महेश्वरोमहेश्वानो। महेश्वप
रमेश्विता॥२५॥ अद्विदेवोमहोदेवो। देवस्त्रिन्दुवनेश्वरा। विश्वेशो। वि
रमेश्विता॥२६॥ अद्विदेवोमहोदेवो॥२७॥ लोकेश्वरोलोकपति। ह्योक
श्वन्दुतेशो॥ विश्वेद्विश्वेश्वरोधिराद्॥२८॥ लोकेश्वरोलोकपति। ह्योक
नाथोजगत्यही। त्रिलोक्यनाथोलोकेशो। जगन्नाथोजगत्यन्नः॥२९॥
पितापरः। परतरोजेता। जिस्तुरनाश्वरः। कवीधिन्दुसुन्दुजिस्तुः। प्रनवि
स्तुः। खयंप्रन्तुः॥३०॥ लोकजिह्विश्वजिह्विश्व। विजेताविश्वजिवरः। जग
न्दुः। खयंप्रन्तुः॥३१॥ लोकजिह्विश्वजिह्विश्व। विजेताविश्वजिवरः। जग
न्दुः। जेताजगजेत्रो। जगजिस्तुर्जगजिस्तु॥३२॥ अग्रणीग्रामणान्तेता। न्तुल
वः। स्वरधाश्वरोधर्मनायकरुद्दीशो। न्तुतनाथश्वन्तुतन्तुत॥३३॥ गति
पातारवेविव्योमिमंत्रकबुन्नलद्वाण। लोकाध्वादुराध्येशीन्नव्यंधुनि
रुक्षुकः॥३४॥ धीरोजगद्वितोजेष्या। स्त्रिजगत्यरमेश्वरविश्वासीसर्व

लोके त्रीगा। विन्दवोन्नु वनेश्वरा:॥१८५॥ रिविजगद्विलसुंगा। स्विजगन्म
गलोदद्याः। धर्मचक्रायुधः सद्यो। जातत्रैलोक्यमंगलं॥१९०॥ वरद्वापुष्टि
योष्ठेष्यो। दृष्ट्यान्तलयकरः महालोगो निरोपम्यो। धर्मसाम्बाजरना
शकोः॥१९१॥ इति नाथशातं॥५॥ योगाभ्यक्तनिकेदः साम्यारोहणतत्त्व
रः। सामाधिकी सामाधिको। निः प्रमादो प्रति क्रमः॥१९२॥ यमः उधमत
नियमः। सन्त्स्त्यरमाशनः प्राणायामचणः। सिद्धः प्रत्याहारो जितेन
द्विष्टः॥१९३॥ ध्यारणाधीश्वरो धर्मी। धर्मतनिष्ठः। समाधिराद्। सुरक्षम
रसीन्नावाएकीकरण नायक॥१९४॥ निग्रेष्टनाथो योगांद्रकृषि साधु
ये तिमुनि। महर्षिसाधुष्यो रियो। यति नाथो मुनिश्वरः॥१९५॥ महामुनि
महामोनी। महाध्यानि महादत्ता। महाद्वामो महाशिलो। महाशातो
महादमः॥१९६॥ निहौपानिन्द्रमस्वांतो। धर्मीधर्मद्वादद्याधजः। ब्रह्म
योनि स्वर्येष्वुध्यौ। ब्रह्मज्ञो ब्रह्मतत्त्ववित्॥१९७॥ पूर्वात्मास्त्रात्मको दंतो
नदं तोचौतमस्त्रराधर्मैव यायुधेहोन्नः। प्रनूतात्मामतोऽङ्गदः॥१९८॥
मंजसूर्विः। स्वसौम्यात्मा। स्वतत्रौ ब्रह्मसंनवः। हु प्रसन्नो गुणं लोयिः।
पुण्यापुण्यनिरोधकः॥१९९॥ सुसंवृतः। सुगुप्तात्मा। सिद्धात्मानिरु
पस्त्रवः। महादक्षो महोपायो। जगदेको पृथिव्यामहः॥२००॥ महाकारुणी
को गुणेण। महालोकांकुशः। श्रुचिः। अरिजयः। सदायोगः। सदानोगः।
सहायतिः॥२०१॥ परमोदासितानास्वान्। सत्पात्रीरात्नायकः। अपू

ब्रह्मिद्योगज्ञोऽधर्मसूर्विरथर्मधृक्॥८३॥ ब्रह्मेत्रमहाब्रह्मयति
कृतकृत्यःकृतकृतुःगुणकरागुणेत्रदीनिन्निमेक्षानिराश्वयः॥
८४॥ सुरिः सुनयत च ज्ञा। महामैत्रीमयसमीप्रवीणं धर्मेनिहंडः परा
मर्थिरनन्तगा॥८४॥ इतिल्योगशतार्द्ध॥ निर्वाणसागरप्राज्ञो महासम्भु
रुदाहतः मिमलोनोष्टुद्वान्नः श्रीथरोदत्त इत्यपि॥८५॥ अमला
न्नोष्टुद्वरोग्निसंयमश्च लेवस्तथा पुष्टिं जलिशिवगुणवत्साहोज्ञा
न सज्जकः॥८५॥ परमस्वर इत्युक्ता। विमलोज्ञो यज्ञो धर्मकृष्णो ज्ञान
मतिशुद्ध। मतिश्छीलदशांतयक्॥८५॥ वृष्णसहदजितारां लेवश्च
निनंदतः। मुनिनिः सुमतिपद्माप्रनः प्रोक्तसुपार्षकः॥८६॥ चेदप
न्नपुष्टदंतारातलः श्रेय आदूयः। वासुपूज्यश्वविमलो। नेतजिह्म
इत्यवि॥८६॥ शांतिकुंद्युररोग्निसुखतेनमिरप्यतः नेमिपाश्चीवही
मानो। महावीरसवीरका॥८७॥ मन्त्रतिश्वाकथिमहतिमहावीर इत्य
अमहापद्मः सुरदेवः सुप्रज्ञश्वयं प्रनः॥८७॥ सर्वायुधो जयदेवो न
विंदुदयदेवका। प्रनादेवतदंकश्चाप्रश्नकीर्तिर्जयोनिधः॥८८॥ पूर्ण
बुद्धिनिः कषायो। विज्ञयो विमलप्रनः ब्रह्मलोनिमर्त्तलश्चित्रागुप्तसम
धिगुप्तकः॥८९॥ स्वयंनूश्वायिकं दप्यो जयनाथ इतिरितः श्रीनि
लोदिव्यवादो। नेतवीरोप्युद्धिरितः॥९०॥ पुरदेवो यसुवधिः
रमितोव्ययः पुराणपुरुषो धर्मो सारथिशिवका।

स्त्री कं मीद्वरो छ द्वा॥ विश्वनृचिंश्चनायकः दिगंबरो नितं को निरारे
को लवांतकः दिर्णह्य॥ हृष्टवंतो नंदो व्रंगो॥ निष्ठलंको कं लाधरः स
वृहत्के शाप हो द्वाद्वांतः श्रावष्टलहरणः॥ ए०७॥ इति निर्वाणशतं॥ ७॥ ब्रह्म
वृहत्मरखो धरता॥ विष्टता कं मला सनः अङ्गन्तरमन्त्रस्त्रै॥ सुरज्येष्ट्रप्र
जापतिः॥ ए०८॥ हिरण्यगन्तविद्वाऽवेदं गोवदपारगः ज्यज्ञो मनुः सतो नंदे
हं सद्यानस्यामयः॥ ए०९॥ विलुस्त्रिविक्रमः सौरिः॥ श्रीपतिः पुरुषोत्तमा
वै कुंरपुडरो काह्वा॥ हृष्टो केशो हरिस्त्रन्॥ १००॥ विश्वलरो सुरधंसी
माधवो बलिकंधनः॥ अधोहजो मधुदेवी॥ केशो दो विष्टरश्रवाः॥ १०१॥
श्रीवस्त्रलं छन्नश्रामान्॥ नच्युतो वरकातकः विष्टक्षेन श्वकपाणि
एव नान्नो जनाद्विना॥ १०२॥ श्रीकरशंकरः शंत्वाक पाली वर्ष के तनाम
त्यंजयो विश्वपाह्वा॥ वामदेवश्विलोचनः॥ १०३॥ उमापति पश्चिपतिः स
रारिस्त्रिपुरांतकः॥ अर्द्धनारी श्वरो रुद्रो॥ लवो लर्गः सदाशिव॥ १०४॥
जक्रं त्र्याधिकाराति॥ रनादिनिधनो हरः॥ महासेन स्तारकजिति ऊणनाथे
विनायका॥ १०५॥ विरोचनो विष्टदत्र॥ हादशात्मविनाव॥ सुः द्विजराध्मा
वृहदङ्गानुश्चित्तलानुस्तुनपाव॥ १०६॥ द्विजराजः सुधर्शो चिरोषधीरु
कं बोधवा॥ नव्वत्रनाथः मुन्नांसुः॥ सौमक्षमुद्बोधवा॥ १०७॥ लेखर्षी
लोनिलपुरापः जनपुरुषजनेश्वरः धम्मराजो नो गिराजः प्रवेतालम्
नंदनः॥ १०८॥ सिंहं कातनयर्छीया नंदनो वृहतां पतिपूर्वदेवो एव

षावा द्विजराजसमुद्रवः ॥१०४॥ इति ब्रह्मशाते ॥८॥ हुद्वोदशाकलः शाक्ष
षडन्निङ्गस्तथगतः समंतन्नदः सुगता श्रीघनो लूतकोहि दिक् ॥१३॥ सि
द्धधीमारजिभास्ताद्वाणि कै क सुलद्वणमबोधि सुचौ निर्विकल्यादर्शनो
द्वयवाद्यपि ॥११॥ माहाकृपालुन्निरात्मा वादीसंतानसासकां सामान्यल
द्वणवणा पंचस्कंधमयात्मदक् ॥१२॥ लूतार्थेनावनासिद्धा शुतुन्नीमिक
साशनः चतुरार्थः सत्यवक्ता ॥ निराश्रयविद्वयः ॥१३॥ योगोवेशीषिक
सुछानावनित्यदपादार्थेदक् नैयायिकः षोडसाधीवादीपंचार्थवर्णका
॥१४॥ ज्ञानांतराधर्मवोधः समवायवशार्थनितान्तकैवाः साधकमीतो
निर्विशेषगुणामृतः ॥१५॥ सांखरः समीक्षाः कपिलः पंचविशतितविविताव
क्ताव्यक्ताङ्गविज्ञानिज्ञानचेतन्यन्नेददृक् ॥१६॥ अश्रुसंविदितज्ञानावा
दीसकार्यवादसात् त्रिप्रमाणोद्वप्रमाणस्यार्हहकारिकाद्विक् ॥१७॥
द्वैत्वं ज्ञात्मपुरुषो नरो नाचेतनः पुमानाश्रकर्त्तीनिर्गुणामृतो नोर्त्त
सर्वगतो क्रियः ॥१८॥ दृष्टातटस्त्रिकूटस्त्रो ज्ञाननिर्विद्धनोनवः बहिर्विद्धि
कारोनिमित्तिः प्रधनत्वद्वृक्षनकं ॥१९॥ प्रकृतिरेव्यातिरासुठः प्रकृतिः
प्रलतिः प्रथः प्रधनन्नो ज्ञाप्रकृतिविरप्नोविकृतिः क्रतिः ॥२०॥ मामाश
कोस्तसर्वेजः श्रुतिपूतसंदोक्षकः परोहज्ञानवाद्यष्टपावकः सिद्धकमी
कः ॥२१॥ वार्ष्णकोन्नीतिकज्ञानो लूतानिव्यक्तचेतनः प्रत्यहैवाप्र
माणोस्तापरलोकागुरुस्फुतिः ॥२२॥ पुरंदरविद्वकर्णीविः ..

स्त्रीकं मरीदोरो छ द्वा॥ विश्वनृविश्वनायकः दिगंबरो नितं को निरगे
को लवोतकः दिर्णह्या॥ हठुवतो न घोत्वं गो॥ निष्कल्पं को कलाधरः स
घृष्णके शाप हो द्वीपातः श्रावृष्टलक्षणः॥ १०७॥ इति निर्वाणशास्त्रं॥ १॥ ब्रह्म
चतुर्मरेवोधसत्ता॥ विष्टताकं मल्लासनः अङ्गन्तरमन्तरम्॥ सुरज्ञेष्ट्रिय
जापतिः॥ १०८॥ द्विरण्यगन्तविद्वज्ञा वेदांगोवेदपारगः अज्ञोमनुः सतीनदे
हं सयान्तस्य यामय्य॥ १०९॥ विस्तुस्त्रिविक्रमः सौरिः॥ श्रीपतिः पुरुषोत्तमा
वैकुंठपुडरीकाद्वा॥ हथीके शोहरि स्वन्तु॥ १००॥ विश्वनैरो सुरधंसी
माधवो बलिकं धनः॥ अध्योहजो मधुद्वेषी॥ केशवो विष्टरश्रवाः॥ १०१॥
श्रीवश्लोकनश्रीमान्॥ नच्युतो वरकोतकः विष्वक्षेन श्वकं पाणि
एवानान्तो जनाह्यन्ते॥ १०२॥ श्रीकरशंकरः शंकरक पालीरथ केतनामृ
त्यंजयो विस्तुपाद्वा॥ वामदेवस्त्रिलोचनः॥ १०३॥ उभापतिपश्चपतिः स
रारिस्त्रिपुरांतकः॥ अर्द्धनारी श्वरो रुद्रो॥ लवोलगाः सदाशिव॥ १०४॥
जक्ते त्रैधकाराति॥ रनादिनिधनो हरः॥ महासेनस्तारकज्ञि॥ ऊणनाथे
विज्ञायक॥ १०५॥ विरोचनो विष्टदत्रा द्वादशात्मविलावसुः॥ द्विजाराध्ये
वृहङ्गानुश्चित्तनानुस्तनुनपाव॥ १०६॥ द्विजराजः सुधमशोच्चिरोषधीश
कं ज्ञाधवा॥ नद्वत्रनाथः शुक्लांसुः॥ सौमक्तमुदवोषधवा॥ १०७॥ लेखवर्ष
ज्ञानिलपुण्यः जन्मपुण्यजनेश्वरः धमराजो नोगिराजः प्रकृतेन लक्षि
नं दनः॥ १०८॥ सिंहकोतनयर्छीया नदनो वृहतां पतिपूर्वदेवो एव

सावाद्विजराजसमुद्रवः॥१०८॥) इति ब्रह्मसदाश्राते॥८॥) हुद्वोदशकलः शाक्ख
षुडन्निजस्तथागतः समेत लङ्घः सुगता श्रीघनो लूत कोटि दिक्॥११०॥) सि
र्वध्यीमारजिछास्ताद्वाणि कै क सुलद्वाणमब्राह्मिसुव्रानिविकल्पादर्शनो
द्वयवाद्यपि॥१११॥) माहाकृपालुन्निरात्मावादी संतानसासकं सामान्यल
द्वाणव्रणा पंचसंध्यमयात्मदक्॥११२॥) लूतार्थीलावनासिद्धा शुद्धन्तीमिक
साशनः चतुरार्थः सत्यवक्त्रा निराश्रयविद्व्ययः॥११३॥) योगोवैशीषिक
सुछालावन्नित्यदपृष्ठार्थीदक् नैयायिकः श्रेडसार्थीवादी पंचार्थीवर्णीका
॥११४॥) ज्ञानान्तराध्यक्षेषु धः समवायवशार्थनितान्तूक्तेवाः साध्यकमीतो
निविशेषगुणामृतः॥११५॥) सांख्यः समीक्षः कपिलः पंचविश्वातितवित्रव
क्वावक्त्रज्ञविज्ञानिः ज्ञानवेतन्यन्तेदद्वक्॥११६॥) अश्वसंविदितज्ञानावा
दीसक्तार्थीवादसात्ताविष्माणो द्वप्रमाणः स्पार्हहंकारिकावाद्यदिक्॥११७॥
द्वैत्रज्ञात्मीपुरुषो नरो नाचेतनः पुमानाश्रकर्त्तीनिर्गुणामूर्त्ती लोक्ते
सर्वगतो क्रियः॥११८॥) दृष्टातटस्त्रिकूटस्त्रो ज्ञातनिर्व्यधनो नवः बहिर्विं
कारोनिमित्तिः प्रधसत्त्वद्भनकं॥११९॥) प्रलतिरेक्षातिराहुठः प्रकृतिः
प्रलतिः प्रथः प्रधसनन्तो ज्योप्रलतिविरप्योविकृतिः ऋतीः॥१२०॥) मामाश
कोस्तसर्वज्ञः श्रुतिपूतसंदोऽसकः परोह्यज्ञानवाद्यष्टपावकः सिंहकम्भे
कः॥१२१॥) वार्ष्णकोन्नौतिकज्ञानो नूतान्निव्यक्तचेतनः प्रत्यहैवाप्र
माणोस्तापरलोकोगुरुक्रान्तिः॥१२२॥) पुरंदरविद्वकं एवाविदातिसंविद

स्वकमीद्धरोष्टद्वा। विश्वनृचिश्वतायकः दिगंबरोनितं कोनिरारे
कोलवांतकः दिर्पह्न। हटुवतोनयोव्रेगो। निष्कलंकोकलाधरः स
र्वत्केशापहोद्दृद्वातः आवृष्टलहणः॥१७॥ इति निर्वाणशतां॥७॥ ब्रह्म
चतुर्मरेवोधसता। विष्मताकमलासनः। अङ्गन्तरमन्तस्थणा। सुरज्ज्वेष्टप्र
जापतिः॥८॥ दिरएपगन्तविदज्ञो। वेदांगोवदपारगः चमजोमनुः सतोनदे
हं सद्यानस्थामये॥९॥१८॥ विलुस्त्रिविक्रमः सौरिः। श्रीप्रतिः पुरुषोत्तमा
वैकुंठपुडरीकाद्वा। हर्षोकेशोहरिस्त्रन्त्॥१०॥०॥ विश्वनृरोसुरधंसी
माधवोबलिकंधनः। अधोहजोमधुदेवी। केशवोविष्टरश्रवाः॥११॥
श्रीवक्षलांछनश्रामाराः। नच्युतोवरकोतकः। विष्वकर्मनस्वकपाणि
एवनान्लोजनाह्वन्न॥१०॥२॥ श्रीकरशंकरः शोन्त्रकपालीरथकेतनामृ
त्युजयो। विसुपाद्वा। वामदेवस्त्रिलोचनः॥१०॥३॥ उमापतिपशुपतिः स
रारिस्त्रिपुरांतकः। अह्वेनाराश्वरोहुद्वा। लवोलग्नः सदाशिव॥१०॥४॥
जक्त्रत्तिधकारातिरनादिनिधनोहरः। महासेनस्तारकजिति। ऊणनाथ
विनायक॥१०॥५॥ विरोचनोविद्वद्वा। ह्रादशात्मविलावसुः। द्विजराध्य
वृहङ्गानुश्चित्तनानुस्तनुनपाव॥१०॥६॥ द्विजराजः सुधमशाच्चिरोष्ठीश
कांबोधवा। नहन्ननायः शुन्नांसुः। सौमक्तमुद्बोधवा॥१०॥७॥ लेखवर्ष
लानिलपुरापः जन्मपुरुषजनेश्वरः धर्मराजोनोगिराजः प्रचेतन्तमि
नंदनः॥१०॥८॥ सिंहकातनयर्थेष्टा। नन्दनोवहतांप्रतिपूर्वदेवोपरे

ज्ञान्या द्विजराजसमुद्भवः ॥१०४॥ इति ब्रह्मशातो ॥८॥ बुद्धो दशकलः शाक्ष
षड्लिङ्गस्तथागतः समंतन्त्रः सुगता श्रीघनो लूत कोहि दिक् ॥११०॥ सि

M. रजिछास्ताद्वाणि कै क सुलक्षणाकोधि सुचौ निर्विकल्पादर्शनो
द्वयवाद्यपि ॥११॥ मा हाकृ पालु निरात्मा वादी संतान सासकं सामान्यल
क्षण चणां पंचस्कं धसया तमदक् ॥१२॥ नृत्यार्थनावनासिद्धा श्रुतुर्नृसिक
साशनः वउरार्थः सत्यवक्ता ॥ निराश्रयविद्व्ययः ॥१३॥ योगैश्चोषिक
खछानावनित्यदपादार्थदक् ॥ नैयायिकः योडसार्थी वादी पंचार्थवर्णका
॥१४॥ ज्ञानांतराधर्षव्यबोधः समवायवशार्थनिता नृक्तेवाः साधकमीतो
निर्विशेषगुणामृतः ॥१५॥ सांखरः समीक्षः कपिलः पंचविशातितव्यविता
काव्यकाङ्गविज्ञानि ज्ञानवेतन्यन्लेदहृक् ॥१६॥ अश्वसंविदितज्ञानात्मा
दीसकार्यवादसात् ॥ विघ्नमाणो हृप्रमाणस्याहृहं कांरि काङ्गदिक् ॥१७॥
हैव ज्ञात्रामीपुरुषो नरो नाचेतनः पुमान् अकर्त्ता निर्गुणामूर्त्तो लक्ष्म
सर्वगतो क्रियः ॥१८॥ दृष्टातटस्त्वं कूटस्त्रो ज्ञातनिर्विद्धनो नदः लक्ष्म
कारो निमित्तिः ॥ प्रधनत्त्वं कुधनकं ॥१९॥ प्रकृतिरज्ञातिराहृहः ॥२०॥
प्रकृतिः प्रथः प्रधनन्त्रो डियो प्रकृतिविरप्यो विकृतिः क्रित्तिः ॥२१॥
कोस्तसर्वज्ञः श्रुतिपूतसंदोस्त्रः परो हृज्ञानवोद्यष्टपादेष्ट
कः ॥२२॥ चार्घाकोल्लैतिकज्ञानो नृत्यान्तिर्विकृतिराहृहः ॥२३॥
माणो स्तापरलोकागुरुक्रंति ॥२४॥ पुरंदरविद्वकं लोदिद्वे ॥२५॥

द्वयो। शबृद्वैतीस्फोटवादी। पार्षदं घ्रानयौ धर्युक्॥१२३॥ इति बुद्धशताप्ते
॥ उप्रेतकं त्यारकत्वीराध्राप्तः परेत मस्तिष्ठितः। त्रिवदं द्वितारानि ज्ञानक
मर्मसम्भूच्छयी॥१२४॥ संहतधनिरुच्छन्नायोगः सहतारणवोपमः योगस्ते
र्हं पहोयोगौ किं हि निलेपनो द्रुतः॥१२५॥ श्रितस्त्रूलवप्रयोगो। ग्राम्याणो
योगकार्यकः स्त्रूलवाक् चित्तयोगस्त्रूलवाक्तव्युः किं यः॥१२६॥
स्त्रूलवाक्यकिट्टारस्त्रूलवाक् चित्तयोगद्वा। एकद्वडीचपरमहं।
सपरमसंवरा॥१२७॥ निः कम्पीसिद्धपरमा। निरुरिः प्रज्वलत्यन्नः मौष्ठक
मर्मानुटकमर्मीपादाः त्रैलेश्वलंकृता॥१२८॥ एकाकाररसास्वादो। विश्वाक
ररसाकुलः। अञ्जनावन्नमृतोजाया। दसुष्टः श्रन्त्यतामथः॥१२९॥ पृथ्यानयो
गीचउरः। इशीतलव्वागुणोगुणः। निपातानंतपयायो। विद्यां संस्कारनाय
कः॥१३०॥ वहोनिर्वेक्नीयो एरणीयाननणुहियः। ब्रेष्टस्त्वेयानस्ति
रोनिर्ष्टेः। अवेष्टो इयेष्टसुनिष्ठितः॥१३१॥ न्तृतायसुरो न्तृतायी दूरः परमनि
गुणः॥१३२॥ व्यवहारस्त्रुत्तो तिजागरुको तिस्त्रुष्ठितः॥१३३॥ उदितो
दितमा। द्वात्मा। द्वात्मा। निरुपाधिरक्तक्रिमः। अमेयमहिमात्यंताश्वदः मि
द्विरवये। वरः॥१३४॥ सिद्धनुजः। सिद्धपुरा। यों द्वसिद्धगणांतिष्ठिः।
सिद्धसंविः। रुद्रगोन्मुखसिद्धलिंगसिद्धोपरहकः॥१३५॥ दुष्टोष्टादस
सहस्राशीलास्त्रः। पुण्यसंबलः ब्रताग्रयुग्मः परमस्त्रुललेश्योपचारह
त्वः॥१३६॥ होपिष्टोत्पव्वाणसंखा। येवलं धर्वारस्तिः। द्वासन्नतिप्रकृत्य

शा। वयोदवाक्लिप्रणुत्॥१३६॥ अप्रवेद्योयाजकोरेयो। याड्योयस्मिपरि
मंदः। अनस्त्रिहोत्रापर मनिः स्मृदोत्पंतनीर्द्युया॥१३७॥ अप्रशिष्या सासको
दद्वादद्विकोदाद्वितोहृष्टः अगम्योगमंकोरम्यो। स्मकोज्ञानजिर्ल
रः॥१३८॥ इत्प्रितकृच्छते॥१३९॥ महायोगीवरोदव्या सिद्धोदेहोपुम्नलीव
ज्ञानेकविज्ञीवद्यनः। सिद्धोल्लिकाग्रंगामुकः॥१३१॥ इत्यत्ताष्टको॥ ए
वमेकत्र॥१३१॥ इदं मष्टोतरंनाम्नां शहेस्वन्लक्षितोर्हं तोयोनंतानाम
धीतेस्तो। मुकिं तांलुक्षिमसुत्तो॥१३०॥ इदं लोकोत्संप्रसाद। मिदं सद्गुणम्
त्वयोगां इदं मंगलमंग्राय। मिदं पूर्वसुयोक्तो॥१३१॥ इदं सेवपरं तीर्थो। मि
दं हस्ते वष्ट साधनो। इदं मेवारिविलेख्येरा। सेलैक्षण्येयकोरणो॥१३२॥ एते
षामेकयप्यद्विज्ञाम्नामुद्गारयनयिः सुव्यतेकिपुनसब्रोनथेऽसुजि
नायते॥१३३॥ इत्याशाधशुक्लंजितसहस्रनामस्तवनसमाप्ता। श्र
संनवेत्तु॥। श्रीसर्वतृष्णर्प्पवर्ष्णमात्रशुद्धिदापलभौश्रीग्रादीनमं
मीमुक्ता संस्कृतस्त्रियोऽस्ति भाष्यत्पालस्त्रियोलाहो
क्षम्योपाद्वदावतीति रतदाम्नायिवहृदसारिविग्रहीतुका सु
तकात्पाणिजीस्वहस्तेन लिखिवत्तज्ञानावयोक्तमेव्याप्तया आयो॥
श्रीकल्पाराज्ञत्वात्॥। श्रीपद्मतोडेनक्षासनं॥४१॥ श्री॥

उनोत्तीसीधेन्पा हहा॥ सकलन्यवस्थकरसदा। सीनेमीजीने
स्वरराया जद्कोलकमलदीवसिपतीश्वरमूतेहनायाया॥ जग
दोबाजिस्वरसती। जीनुवैलीतुजकाया॥ अवीरनवांणीआपजेउत्रुग
मूजमायारा॥ गणधरजेतमनिनमा। सकलकीरतीग्रस्थीरातास
यदोदयदनमणीसीन्द्रवनकीरतीगेन्नीर॥ ३॥ जानन्द्रष्टवाजान
हवा। वीजकीरतीन्द्रवतार। नहारकस्त्रवंदपटि। सूमतिकीरती
सूषकारा॥ ४॥ गूणकीरतीग्रणगणनीधी। वादीन्द्रष्टवागणधार
योमकीरतीपाटिग्रस्थपद्मनंदीजकाप॥ ५॥ एगठपतीपदनंमाकह
प्रहमनकथाष्ट्रबंध॥ हरीवंसयस्थीउधरी॥ जोइसूषस्त्रवंध॥ ६
सगच्चसातरी॥ कलि॥ ७॥ आसबधस्त्राणीन्द्रवीअणएकसारे
बीस्तारे जंबूजोजनालषकहोए॥ आतेहमंधितेसूदरीस
नजाएरावधाणीरेउचोजोजनलषरहो॥ ८॥ आतेहनीदीघण्ठ
गन्नागिधेत्ररा। स्त्रवेत्ररा। नरएसनासनउपमया॥ ९॥ मंधि
वीजयारथष्ट्रचंमरे॥ छुषंमरे गंगा सीधूथकीहवा॥ १०॥ च
लावा॥ पथावत्रीसहिसच्चारमजष्टमिमगदसूदस। राज
यहनगीरा अनोपमाजाहांमैषवेस॥ ११॥ षत्रीवंससीरम
मणीकरिराजसणीकरायानीजप्रचंमृष्टपथाजि॥ १२॥ च
रीनमायाया॥ १३॥ स्त्राविगंएकदीनमालीकडि

केतावी प्रस्तु गीरी माहा की रजा व्यास मोव सरण समेता शा मानी निः
संनकी धो दी धो ये चप सा आ अंग दक जे रादेश निचा जी उमा गर
राद्या भा हर थी वा हनत जी सजी पूजा अष्टव्य कारा समव सुता
मधिज इ पूजी आज नजि कारा ॥५॥ तव सांतज संक्षेप लंज जो जन
वरधमि ॥ जव चमण कारा बण वर्णी चार गती नो माहा पहिं
ए८ धरवी नव्या कहिको मै समेहा कथा प्रह मन नी कंहो जिम

.. न हो ७॥ अहो अणी क संज्ञ जो कहक प्याए वी स्ता रा सं
लिस्तूष जो गव) जव ज्ञवी क पंति पार॥ या जंव ज्ञर थठ
घंस तांहि आर जघंस न दार। देस बत्री संसुहि स नो ए सो रुदेस
सुगरा ॥९॥ ते देस महि दु द्वार कां न गरी अ तौ मनो हार॥ वी स्ता
र जो जन न व कहो तने बाइ जो जन बार॥१०॥ राज यहर ती अं
मेणं पूर मधिदी सिंचंग। सीषर उषिरि सो जनता धुज क जन स
जव न करंग॥११॥ जे ह पंग ती वी सा तन वी पण वी धी का मनो हा
र कांति स जूत कां मनी मांहि दथा दम दा ता रा १२॥ हट स्ती ॥

। दी के र जन ना व्या पार विवहा री च्याब बहु व स्त वी च
। धह जार १३॥ १४ व्यथ ह र गढ़ पाठ त्रु पर तोर
। मैत सार चोर गो पूर सी धर ना सी ॥

वापीज्ञपनदीसंसोवरउत्ता सिंगं जीर। कमजे मेंदीसूर्यं छि
वाउसीतमंदसमीर॥१५॥ जातीचंपकके तकीमाले तीने सच
कांदा वेलवालो निवोरसूर्यनीपारी जाती असंदा१६॥ प्रफुल्ली त
पकज सेवं दीजूषमीजासूर्यना नीपमरुठमो गजो। दंमणी गूल
बअसूर्यना१७॥ निकूइजो बूजं दीलीला रणी सहि कारा राजवृष्टरा
यणीजोरी। फण सके लज्जना२१॥ चंचूचंपक निकपी तजः
कायसूवटसाज्जा। पीचुजे वंजूलज्जे वेलफैनी। नमधूक तालेत
माज्जा१८॥ डाष्ममुपरै लचोनवंगके प्ररकेज। कसूर्ता के स
रतंश्शावनमसीचनाहरवेज्जा२०॥ कमजे अलीमकरहेज्जोजे
पज्जनी तरवण्णजेताहं समोरचकोरसायिकोकीज्जोकृज्जेता२१
एहवीवनवासीतणीसोज्जानज्जालिपाराह्वारकोरत्तीअमणीज
हंहरयोरुञ्जाका२२॥ तीहंडुस्त्रघरापतीज्जावीत्रीषमनरेस
अमरन्त्रचरसाधीआसा२३॥ धीआशयपर्जोसा२३॥ राजवृश्ल
वज्जोगविजादवकोरनाकरस्तरानांगसेज्जासीरदज्जीजिएउ
अरीकसचकवृर२४॥ करिकासासोरहलाजिएनावग
नाथोहेवानेसाज्जीनपीतराइच्छा तावज्जीसीवेलदवा२५॥
तोसपटराणीहवीकमीसज्जन्ताजोणालघमणीजंकूती
तमण्णा वहगूरणापाप२६॥ सूसीमागत्रीवेलपदा

वतीवरनारिंगंधारीएञ्चसून्नोगविस्त्रैषुप्रतदारा॒रा॑२७॥१८कटी
नतांहोऽहतआच्योसन्नामहिधीराहाथजोमीयमकहिसांन्नलो
कुस्त्रंगंन्नीरा॒र्या॑दिसकूरुजंगलधणी॥गूणहस्तीनागपूरसो
रायदूजोधनकहिसंन्जजोवातनरेसा॒र४॥१९नांसारुषमणीर्णि
यहोश्वदोपूत्रउदारादेअमारिजेणजोनावीस्त्रान्नरथर
सवबोहरबोत्नावीरादेइवस्त्रन्नषणांना॥जश्कद्वनीजना
यनितीहोमोमीठउस्त्रमेना॥३६॥सत्यन्नसायमोकलीऊङ्गकासु
षमणीजेहाआपणबहूमापूरवपूनिपूत्रथसविजेहा३७॥तेह
हज्जेधनतणीपूत्रीकापरणीजेमाकेसपासवीस्त्रपूत्रीका
सीरतणीआपिजोमाइ३॥वरबुहवीहवासमियंगतलिविणीते
हचंपावीनहबुहावीयिआपणीआस्त्रृएहा॥३८॥साषिवलन्नाडिक
रीकसुषमाणीयिआगंगीकार्यदेवदकीरतीकहिप्रत्यपंतसि
दिकारा॒र५॥हहा॥जयजयकारहोसिवणा॑नांसारुषमणीर्णिगद्वाग
रन्नतणीउत्तपतकहूसांन्नलजोसहृतेहा॒रा॑स्त्रेजस्त्रतीपदम
णीपसिमरिणीव्रसंगादेषिस्त्रेष्वपनेमोहामणा॑स्त्रेष्वपनेमन
णीर्णा॒रा॑हंसद्वीमंनिाच्चविसानिआकासिस्त्रीहाराकर
कोमनीमनधरतीहरयंआपारा॒रा॑रागति॑चा

बधरीजागीततकालास्तानीसोमा गीतरसालनाथतस
मिवाजंति उराउदद्याचलउगंति स्त्रैराँ। अगवीन्द्रषणव
स्त्रधरीपीडपालिष्वेमदासंचरीकस्त्रिअतीघणाआदर
कीता। अस्त्र अर्धसीहासनदीधारा। दोयकरजोमीकहिं
म्पनीस्पनदीर्गेपसमयसमीजंगूहसवीमंतिसरी। गय
एअंगएचालूपमवर्नी॥३॥ कस्त्रिकदिवेनउअवधारासु
तहोसिउरगरज्जिनारिसूदरत्नघिएनीनावंताआकसि
गंमीअतीबलवंता॥धा॥ सांजलीनिवीकंसीरुषमणी। जिन
मससीकोत्पक्त्वापीर्णणी। गर्जेधरोतेदीनंधीजांलिना
जघिरगइपासीकलाण। पाजिलीपिरिसतज्जामासूरीध
रिगरन्तज्जनदजन्तरी॥ बहुयक्षगरन्तसंप्रातिधरा। जीन
वरामहरन्देवनेमोहीठवकराद्धा। गरन्तवृधदीजिमहज्जे
याराप्रगथयेनवलागीवारा। अज्ञानअरुचपंसूरमूषचद
अप्रेमेवकसदिवजीकाहाए॥ मंदमंदगतित्रीवलीनंग
आजसतीडाअतीष्वसंगोउपजिमर ठाअ धारी
जीनपूजामूनीदानहतए॥ या-
नवमास। सूतजनमाजनप्रगी

मणीमन्त्रं नंदा सूतदेवी पांमां सूषवेदाण् ॥ वधां मणी
पीउपासि साराब्यहूजेषपाजएविचारातवेनीजा
यपोडाकांहनापीतांबरउठीसून्नवंनाथ् ॥ सत्यनामा
सेवकडेकहा ॥ कुस्त्रिताणि उओसीसिरहा ॥ रुषमणीसे
वकमनवह्नकोमि । पंगेतिउन्नाकरजोमि ॥ श्रीद
मोदरजागजहा ॥ रुषमणीसेवकसामातहा ॥ करजो
मीकहिप्रन्त्रुञ्जवधारिक्षघ्यमणीयिजल्लेपूत्रउदाराथ् ॥
तवन्नामा सेवकसून्नमती ॥ आगलञ्जावाकारवी
नती ॥ सतन्नेमायसंन्नलिन्नपजनमोपूत्र
आनोपमरुप ॥ ३ ॥ वधां मणीपिहित्वेजिएकहीव
जोपूत्रथायोत्तेसहा ॥ बहुऐबुत्रसंघातिजएषा ॥ वधां मणी
थीयुरुत्तन्धुन्नश्पा ॥ ४ ॥ धाख्विणियुरुपदयोमिसाराध्विमिल
द्वीतएोनहीयाराध्विध्वुमनस्ततयाटवी ॥ धुरेपक
रोन्नवीयएमांनेवी ॥ ५ ॥ वधां मणीसेवकपांमीच्छा संतो
कानीजस्तानकगया ॥ तिणिसमिगगनांगलदेवा धुमके
उञ्जाव्योत्तंष्ववा ॥ ६ ॥ रुकमणीस्ततउपरजवजायि

वामयोनस्तेजीतलवथारा। चितिंकिणिष्टत्तुं प्र
ङ्गयान। आजसद्वैतसमाख्यान।॥१७॥ इमचितव
उत्स्थाधुमकेज्ञ। दीर्घसमयाक्षात्तसमत। बीजं ग
द्वानप्यीकस्योवीद्वारापुर्ववेरजायुंतिएवार।॥१८
रातांबेत्रकरीदाकरातधुमकेत्तुकोयोजमकाल।
मासपेत्तसमत्तीष्ठीब्लाल। उत्तीव्यक्तासगठीतत
काल।॥१९॥ चितिंष्टवंहकरीमांनदसदीकपाल
दीउबलीदोनासीलउपिरिआस्फननकस्कि
हिएहनिअग्यनीमूषधस।॥२०॥ अष्टवानाष्टस
मूढमणाराजनेचरजीवकरावृञ्जाहारोव
लीदेवमनवंतिअस्त। मांसपीमारिकहो
कसू।॥२१॥ मूकएहन्प्रवननीराधारामरतं
जिमनवत्तागिवार। प्रदमनपूनियमचत
वीञ्जावादृषदीराटवी।॥२२॥ गजनष्टकीह
गोउतरोबाजकतीष्यसीलोतलिधरो
झोमकेत्तनीजस्तुनकगया। एहविएकअ

रा काजा ति कर सं को चाकि मआ जे ॥ राणी कहि उठ पूत्र जगण
को जब न साली सो हां मणि इश ॥ आना त को ली सीर जां मापंच
सिहटा कर वा गप तां मा ते दूष देषी हकि मसहा ते शी पूत्र वीना
हरहु ॥ ३२ ॥ सो जली राजा मन मांधरी ॥ राणी निरली आत जक
रा करण पूत्र करी बोलि रावा बेधी ज्ञाने पटरा या ॥ ३३ ॥ जौ वरा
जपत दी धूए ह ॥ मम करं राणी मने संघे हांत वहर शी निही धो
बाल्मी मेघ पूर पूर गय तत कान ॥ ३४ ॥ गडगर न राणी हती ॥
हजन मो पूत्र त्रौनो प्रमदे हाय मरा जा सहजा गन जाणि जा
जि पूत्र हुक्का आ पराणि ॥ ३५ ॥ गीत न तजा चक निदो ना स गा सहे
धरनि बहु मो नायणी पिरिनि न ममो हठव की धा जन मपन्न
की धी सूख सीधा ॥ ३६ ॥ दूमन वरण दी ग ए जाणि ए दूमन
नां मधु सूषणाणि ॥ बीज च दृजि मवांधि एह ॥ कोंति कजा गूरा
नोने होठहा ॥ ३७ ॥ पून्य वये रीष्ट उच्छृप संता पून मनो वाट
संवीनं तापनि प्रहृमन सूतपा टवा ॥ पून करो जल वी अन
मन वी ॥ दृद्या सूषणा म्योते सूत धृष्टि वी द्या धरनि गहा द्या
रांवती बुतांतनी ॥ कथा कहु सूरत सा रानी सो लिरि राणी रु
कुमणि ॥ सरती वा न समेता जा गजु यिपूत्रनि ॥ द्या सिनही कु

एष्यपूत्रनीमुङ्गाज्ञातवीजोगा॒२८२८८ तीनोमिपनी। ग
इचेतनामूरडासंजोगाधोराण्डा॑३५॥ जेएकसूनादवपति
धसीआवैरुष्यमणीनिशेहासमूदवीजिआदिसङ्कबनकृसू
सूहृष्पांसातेहाधोराण्डा॑३६॥ सून्तेरसहधसीआवीआबल्लेवै
लताबहुमांहोमांहाष्मगषेमाउलेनताजूछपूत्रनिजेइजाय
कांहां। प्लाथ्थ। यसकोनाहलेअतीघराण। हरीजोविरशविनर
नारिपूत्ररीपूदीरोनही। ताहांसूकरिसबलाजूजाराधोराण्डा॑३७
सीतोपवारञ्जनकथी। चीतवाज्वरुरुष्यमणीनिसोराहृष्मधर
उकोमनी। इमडोलिरुष्यमणीनरप्याराधोराण्डा॑३८। पूत्रष्वबरि
हविजोइसातम्पाठामारमनसोगसांतापास्त्रनन्तोजनवीष्मी
आवरोमूष्टीतजोबहुहोहालोपाधोराण्डा॑३९॥ यसरुष्यमणी
मनप्याठवा। सहआवैरेनोजनीजनीजन्नवासि। जाहवचंतात्र
रप्यया। बनकृस्नेहृष्मवह्निगपासाधोराण्डा॑४०॥ तिएसमिना
रदमनी। आवासासद्यउतरोगृणधाराकृस्नेहृष्मसन्नामादिझ्ञा
वीउ। सहउरीनितसकीधृष्णांसाधोराण्डा॑४१॥ वज्रकठोन्ते
दोसालनोबन्नचारारारेगृणवतेउदाराकोउननोइकृ
क्षेत्रोपातवरणरमस्तगच्छटालाराधोराण्डा॑४२॥ बाहिवचियो
जीधरिवोसगांमारेहञ्चढीद्वीपपचाराण्डा॑४३॥ कलेसको

सासीसीमधरके वल्लीनवीआएप्ररणआसिआ३॥एतीरथक
रजोणायाविहिरमानसूजाए।मीथासतनिटालतोगयहोजांगेत्तं
ए।धा॥तेहनारदतीहोवेगस्तासमवसरणजेइदीरास्तवनक
राजभवांदीनिमानवकोषबइगाप्य॥रागदेसग।विगेजइस
नामधिदेषिनानावीधीसुधिमनसूदिसूवंदनाकरीए।थापझ
रथचक्रीतहोपेषिनरसन्नाजीहो॥किमइहोनरसपकीटक
ए।र॥ईममननीसोकरी।नारदहेत्तीधरी।उचोउधरीजुनी
पूढ़ीआए।३॥कहोपन्नुआसरुपादेषीयमानवीरुप।कहिलु
यत्राकुंडेकारणिए।धा।त्रोटक॥कारणकद्वन्द्वयमानलोजेवन
रथमांहिधीर।द्वारिकानगरीवसि।त्याहोठस्त्रजादववीर॥१॥तेह
निराणीकमणीद्विजणोपत्रउदाराधमकेउदरोगदोतोपुर्वनो
संस्कार॥२॥नारदएनरतार्थतोआवीउमनधरीनेह।पत्रहरण
जपृच्छीश्चिजमटलिसर्वसंदेह॥३॥दसधनूषउनतकाथानरथ
षत्रिआजापंचसतिउठेहकहोय।आपणिनरराज।धा।नारदनि
तवमुकीनिचक्रीकहिकरजो।धोमकेउयिकिमहरोएसान्न
त्वान्नकोटितीर्थकरकेवल्लीसीमदरकथाकहिस्त्रणराय।
धूमकेउकुमरन्नवांतरासान्नलिसूषयाय।धा॥जूउजं

बूद्धीपमोहि न्तरधारेविज्ञाना॥ बोरालाभमभवत् रसरा॥ अत
एक सालीओमरसालाभा वरसिष्ठो लगा॥ दृक् ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
हनाम॥ अस्मीन्नात सनारी प्रदर्शन विहृण्ण॥ वास्त्रोरा॥ ॥ ॥ ॥ ॥
लिए॥ बहुगृण नारी तेहा धरना वास्त्रोरा॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
प्रतिरहिराश॥ तेहनिष्ठवपसुनी वास्त्रा यज्ञता वास्त्रा॥ ॥ ॥ ॥ ॥
वाउचूती बीजो सूतस्थपकमाण॥ वास्त्रा॥ विहृण्ण॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
मर्तकप्रमाण॥ न्तरजोराचारवाकाशता ताण॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
गिर्जधरांता॥ वीवीधवादकर्ता वाहन॥ तथा वानीवानीता
एधा॥ त्रुटक॥ हवावादी सालीयंतीनवीकान्तिनानानावीता
नदीवेधन नामयतीवरसंघापक कर्मावीता॥ शापुत्री
वनीता वेनवीहारि मनीवंदननीकाना आगनी॥ गता
उचूती॥ वीषविस्तरमूषपमा जो॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
रितनीवांदननीकाना॥ अर्द्धन्तीवाहनलाहु अविग
नमूषपमजा॥ रा कवणकार्गा वनधादिनोर्द्धन्तीवाहु अविग
णि॥ आज्ञतद्धविधववनाकिमगवन्धुमान्दान्दा
अहोवीषउदानमादिमनीआवाहन्तीव

नितपस्वा॥ एह आदिशूरघणाधा॥ तेहनिवादवाकारणा ज्ञानो
जाउसहमत्ती॥ धर्मसंज्ञततांषको तांहांहोयसिमतिनीरम
त्तीपा॥ सांज्ञत्तीवीष्टवीचारुवंदको अमथीनवो॥ तीहांज्ञेजे
इयतमासो तेहमूनीवंरकेदवो॥ नदीवध्येनमूनीष्टकासिधर्मि
नोमारगजोहां॥ अभीन्नतीवाउन्नतीवीष्टबिज्ञावातीहां॥
अवधीशानीसतकीमूनीसमीपिबिगेयठि॥ तिणिकोल्नाहजे
करोतावीष्टबोल्नावापहिटा॥ चालेपछिपुछिमूनीहीप्राक्षां
दांधीश्वाव्याकहाद्वीप्रावांराहीया सोभ्यत्तीर्मस्तीरदि
शा॥ २॥ तसोसात्रसूवषाणो॥ आवा अमोजानजाणो॥ मनज्ञाणेज्ञा
वासालीयामप्यकीएरा॥ पृथृञ्मासनल्जहो॥ वक्तव्यान्नत्ती
रहो॥ पृथृकहोज्ञावाकूणगतिष्ठकीएरा॥ वलउद्भासपाक
हिएदूकोशनिलहि॥ सहरहिष्टतगदेषीकरीए॥ ३॥ दोरुका॥
दषीअवधीक्षणीमूनीकहिवांहमणएहा॥ गतिष्ठकातमोआवी
आहविकहस्तणजोतेहस्त्रहांसाल्नायोसंवासीकृषीबल
हवोएक॥ नामष्टवरकतेहनूवर्तीष्टजानिवीबेको॥ ४॥ एक
दीवसिष्टवचाल्नैनिहन्त्तेनाम॥ षेषु तांवरसादवर्तोअ
निपवनप्यकोम्॥ ५॥ आकल्नोपयोअतीघणोहनजोअम
कीतेहावटतनिविवृष्टन्नल्नैन्त्रपावीउमीनगहा॥ ६॥ सात
दीनवृष्टाहवीकोज्ञेनिसाकिकोहां॥ षेषुसमीपिसीआ

त्वी आंविन्नूषां आ वो ती हो॥५॥ द्युधा पीते जो त्रष्णा धान्नूना उद्
रहुजार॥ पेट सूल थी मरए पासा धरत मो अवता राइ॥ पहि द्यु
वरक घे त्रमांहि वहु तलिग उजां मविसी आल जमए पांधयो
त मो अवता राण॥ करेवत्त नी को घत्ती करी लैशी गउ नी जो लासे
काउ परिअजीयठि॥ तमेज़ जू उते हाया चालिन॥ तेहु वरक नां
मी तां हृथी मरणापां॥ मी। युतजां मी ऊरिअवी अत स्थाए॥६॥
जनमपां मो कुमारा पूत्रधिरिसूष का रगन सारजाती स्मरपां मी उए
मनमाहि चंतियमवधु मातक झुकिमाझु सुतनिमतात नव अं
चरुणा रा॥७॥ मञ्च एव नोरहि॥ सङ्कुमुजो मूजो कहि॥ दृष्टि मनमा
हिअतीघन्ना धा॥ त्रोटक॥ अतीघन्न दृष्टि तेचं तविष्टु कुटमुजो
तेहा सतकी मुनी द्विजो जावो सज्जामांधरी नेहार॥ अहो जीव सौ सा
रमाहि अवतरो प्रणी वारापी तो जनुनी पुत्रपुत्री न्नगसी न्नर
थारारा॥ पुत्रनिधिरिपां मी ओर्कै मिजु उत्र अवतारा सुकल्ला वजये
रहरो जोएसां सारअसार॥८॥ सां जली स्नमुषय यो मनमांध
री वहरागादी घाली धा नीरमली करो कुटबनो परी ताग॥९॥
केटजा सावक यथा सां जली एह वीच्या रास कलन सो जम अ
दरि केटजा साम को तधार॥१०॥ वीष्विष्ववज्ज्वाययी तां
होयी अवाने जगहा मुनी निजनी साममा रवाज्ञा वाते हा

ब्रह्मगमुनी सरसु कता जघिजघीला दोयाप्रज्ञाति कालिआ वीआ
मुनी वाक्यास्तकु कोया जा जनक ननु नीवजयथी मुनी वचनंथी
नीराध्य राजघिजमेला जीवता कहि द वांडकीरती बीचारा रा।।
रागकेद्वारा द्वारा हृहा॥ बीचारी ब्रह्ममण्ड्रमो अग्रापद उ अती
कीधामुनी मारण प्रारोक्तथी अपकी रत अधर्ती त्वीधाश। मुनी
प्रत हृषीधरीया मी आ। सावक नां व्रत सा रामन सूधि ते साँचवि
लीधो ले व्रत बारा रा। पात्रदो ज्ञादि नीरमला करि ते जन्म धरसे
वासमधमरण एकीह वासूधमि ते देवारा॥ सावक व्रत पालि अध
कीपां मासूम्भती वाच वीआ जोधां अक्तरा ते विवाहां मण्डी वी॥
सुदृदत सौंधी वर्तसंधारणा ते हरिनारिपुणी नद्यु व्रज वली
माणी नद्यु अवतार॥ ५॥ ते विसुद्धतमोटा अहवा। जो वनलिंगरि बेदू
लाजहिक दोर धबिसंग द्यावे न मुनी वीर वाकालिद्वावा। द्यद्वा
ग्रसु न्यका दोरे वली चंद्रो ज्ञाना॥ ६॥ एन्नद्यु माणी नद्यु लिंगने हह
वोततंकाला॥ ७॥ रागके दोरो चालि॥ न त कलमुनी न मापुः
ठीजरो चंद्रालि स ने हहक क्षेत्रं ज्ञु अमक्षिमउपनौरो रोऽन्
ने हहका राणारहस्यश॥ युरुकहि ज्ञवतणारे॥ ताहारां तात्त्वि
माता मीश्या सूर्यगमो ही आरे कीधी लशनमतिहातारी त्रो रव

५८८

तातकरतो जन्मतणि तेजमी आंबह सांसारान्मतां नमतं
 सपच्छुना नोपासाए हञ्च वताराश ॥ सांजलतां प्रतिबोधजपां
 मीधरीवशरागञ्चपारामासएकसंनासकनासि कीधो ॥ प्रोणत
 णोपरीहाराश ॥ सपचमरीनंदीसरनोमादे वथयं युए धीरसुनी
 अज्ञाधानेगरीमाहिङ्कृ ॥ राजेज्ञमाराश ॥ योवरन्तरिपुत्रीरा-
 जाय-तेज्ञीरीगूणम्भराजाजा संयवरामहपमानीनितेमाबहु
 तरराजाधा ॥ धात्रीसहीत पुत्रीवरमाजाधरीआवीतिगंमाते सवि-
 नंदीसरनोमासोराआवोगृणउदामु ॥ अहो सोसारच्छ्रमा-
 नुका रातिसुमासूरासागुरुष्टिपुदेवतांत ॥ लंगदेवजोक्ष्यम-
 दीसास्यतेह ॥ द्वासांजलतां सम्प्रकक्षपांमीधरा वैराग्न्यं पार-
 आयैकापासिजईनिलीधाद्वाजवज्जलतार ॥ ७ ॥ पुरीन्द्रमारात्तद-
 साध्यस्पावकघ्रतधृधीर ॥ अक्षसांतसंनासधृकारीनिधाणतजीवमवीर-
 पिलिस्वगेदेवमहधीका ॥ उपनातेदेश्रात ॥ अमरदधुनाजो गथकीवि-
 सागरपाम्पासाता ॥ ८ ॥ अजोध्यानं गरीअराजोहन्मासूषकाम-
 दरवतीसमराणा स्त्राकामसमोअवतर ॥ ९ ॥ धरावतीगर्जेउपनी ॥ अ-
 ग्रीनृतीवरदव ॥ नधुकुंमरनांमितेकीदि ॥ सूनटकरिक्षुद्वसेव ॥ १० ॥
 वायुनुतीचरदेवहतोतधरावतीक्षिजायो ॥ कैटन्ताम्लिकुंमरत-
 धुजीनीधमतशुक्लपायो ॥ ११ ॥ मधुकुंटन्तरिज्जतमन्तदर-
 जोवन्हजोवनपाम्पाधीर ॥ परणीरोजस्तामन्तद्वधराण

स्तु दरा सूक्ष्म जो ते दीर ॥२३॥ मधु कमल निराजनी धो। क इ
 टवनि जो वरा जाए मना चराजा यदी घाती धी आतिस का जाए रा। रा
 ज जो गव तो ते हनि बिसी ली तक ना मिए का बेवसि क स्वाम प्रकश दब
 बिचार्ना सुन्न र अनेको शप॥ मारग जा तां वर पुर आवाज तरी आ ती
 हो ते हावी र सेन रा जाय ज़स वा प्रधरा व्यानी जगे हा १६॥ वीर सेन रा
 जा पटरा एणी चंडा न्नागूण घाणी। कुमवंती रा ज्ञानि तो लिंबि मधु री वां
 एणी १७॥ हाव ज्ञाव व वर वीच्छो मवं ती मधु रा जाय दीर॥ नेत्र मारग थी रा
 य तणा मन मांहि आ वीष मग॥ र टा। रा जा ते ह सु कां मत एणी बद्ध की माके
 र वाच्छ धाय यो पुवे भें स्कार ध की ए मत णा ने बंधा १८॥ मधु यजै
 विरी व स्पकी धो न य पास्यो करी ज्ञध। अजो धान गर्दिय आ वो पाढो फु
 री प्रबु धा १९॥ अंत ह पुरुषा यि सह सो मता त मावा ती जगे ह। आदर
 जा व अने ककरा वि धर तो कुरुषे स ने हा २१॥ वहू प्रकवां न करा
 वी जो जन व स त्राज र ए व्यन काहु तहु पुरसू सह स तो धी। मां कला
 करी व वे का २२॥ वीर सेन रा जा सू वो त्तो मधु रुजा मनो हा २३। चंडा जा
 नि जो गिं आ न्न धर्म कर वांहि ना रा धा २३॥ चंडा जा रो णी नि आ मति
 रि मुकु जा उ हवा व स्त्रा न्नु धए जो ग के रा वी मा क त त सूत त पेवा २४॥
 इम कही अती आ र साधि वीर सेन वो त्तो वा मधु गता चंडा जा साधि
 को मत णा सुष पां मारप॥ पटरा गा करा नी जा प्रर रा धो जगा २५॥
 र शुपापा वीर सेन चंडा वा वीर द्वे धों मां मी ग त्तो जगा २६॥

एथरफर तो होटि दे सदे सांतर ते हाचं रा ना चंडा ज्ञान पतो धृ
रीएकांगो नेहा २७॥ चंडा ज्ञासाधिसमुखुरा जा सुषमाणिसांसारावी
रसेनवीरवलयश्चावो अजोध्यानगरामण्डारा २८॥ एकदीवसिरा
जाराणीसुगाषचडीनिविगो चंडा ज्ञाधिश्च ध्रो दीष्ठीपुरवपती
तो होदीतो २९॥ अहोनाथश्चवलोकनकीजिपूर्वीपतीमुकुआवो
तिणिसमिएकपरंश्रीगामीकीवपालधरीलाको ३०॥ परनारीसाधि
एधरीजो अमण्डा चारथी आमजा एहनिमामुष्टितेकीजिसोन्नलिसी
माहाराजमुहुरअन्याइमोटीकदीयकीघुपापप्रचंम एहनिमुक्तिरिषि
एहवो। हस्तपादसीरघंम ३१॥ तिणिसमिचंडा ज्ञाकोलीनाथसुणोमुक
वाणी। एहदोषउक्तनिपणलागिजिमङ्गपरस्त्रीआणी ३२॥ तेहवच
नसोन्नलतोराजापांसोमनवरराग। एहवचनसाउडबोलीप्रिय
इहिवानहीलाग। ३३॥ पापकरममूरुनिजेलागूतहनाकसवीना
साबनमाजेनिदीषालेशनित्रोमुसोहवीपासो ३४॥ तिणिसमिस
किसञ्चमवेनिसुनीसहिसंसेषातिआवो। नोमवीमजेवाहनजे
तीवरनुरायततिणिमनन्नावो। ३५॥ तेहवभमाजेमुनीवरवेद्या
धर्मसूलातिणीवारामुष्टुकइत्तचंडा ज्ञायदीष्ठा त्वाष्ठोन्नवजेज
ताव। ३६॥ चारात्रपालितेरघुकारिपापकरमपरजालिदिसदेस
तरवाहारकुर तोजेनधर्मञ्चजूआलिा ३७॥ सेमेदसीषरचडी
क्षायवसानिकरीष्ठपणएकमासासुधसमाप्तिष्ठानतनीनिवो

स्वैंगनीवासाइणा॥मधुमुत्तीआरण्ड्रें स्वैंगि अंद्रतएपदपामो॥ह
वाकइटबमुज्जीवरत्रिद्युतस्वगिसामानकथयदेवाध्या॥बावीससाग
रआयसपुरएकरीनीआरएत्रिद्यासप्पमणीर्गन्निआवीउपनोप
हूमन्तकमरनरांडाधशा॥जांडुवतीराणीनिर्गन्निकइटन्चरत्रिव
तारासंज्ञमसाध्वानिजेहोसिमुगतवधुन्नरथाराधशा वीरसेन
चद्वानावीरहियावरक्षेंगमजाये त्रिमससारान्नमीबहुकाललि
तापसनूकोलपायोधशा॥कायकेलेसकरीमरएजपामीधोमकेत्र
हृहदेवापूर्वैरथीष्ठृमन्तुकरुहरएकहिजीनदेवाध्या॥वी
मन्त्रयारध्वनीदीष्पएसोणिमेष्टुकरपुरवासी॥कालमंवबरवीद्या
धरणेहिष्ठृमन्तकमरवीत्तासी॥ध्या॥सोलवरसनोत्तमरथ
शनिसोत्तनान्नतीहोपामी॥द्वारामतीयआवीमन्निसाधमणीनि
सीरनामी॥ध्या॥कथासांजलीउगेचक्रीपरमिकेवत्तीपायानांर
दपएनीनवंदीचाल्लोमेष्टुकरपरद्वायाध्या॥ष्ठृद्युमन्तकमरत्रि
मतोदीगेपांचसित्तमरमूजाराकांतिकेज्ञाल्लाव्यनदेष्टानिपं
मोहरीष्ठृपाराध्या॥कालमंवबरमिकमन्निकमान्नान्नपरसं
सीष्ठृत्तीवाहाहारामतीयकूमश्टुक्षेष्टुक्षेष्टुक्षेष्टुक्षेष्टुक्षेष्टु
त्रिहोरुष्मणीलुतवहद्यांनिं॥सूक्ष्मेष्टुक्षेष्टुक्षेष्टुक्षेष्टुक्षेष्टु
लिहरपृधसेनिजाफ्केत्तिघोरी॥ध्येपणीअंसोकत्रिकालित्रे॥

ऊरधरस्यामूकवदिवाचाएहचिहिनष्ठीसौलिवरस्योजमरम
त्वित्तुजसास्थाचापश। वल्लत्तुरुषमणीरुषसुबोत्तीत्तुत्तात्तसमं
निष्पूत्रष्टवरष्ठीस्वेमीमूर्कनिदीघृजीवीतदोनापरा। इमरुषम
एनिहरुषप्रमाणीनारदगयोनाजेहादेवेहकीरतीकहिसो
जत्तान्तनीकथाकहसुलोतेहापर। हाहा। रागमास। हहा
अन्तीरोमउठवपरावीधवीनोधवीत्तासाध्यूमनकुमरके
रिवरणासस्वेसास्त्रअन्तासाश। वीध्याधरकोलजोग्येजेवीध्यासा
धितेह। वोमञ्चनआदिवरणीसकलकत्ताग्रणगेहारा। कोककला
अगिष्ठणीगोनकत्ताकग्राध्यारा। वाहवीनोदवीवादष्ठी। जिनोज
सवीस्तारार। परीतत्तनष्ठीतचीत्रीतकल्ला। गणीतकत्ताविवि
हाराइतादीकबहुगणाष्ठीकीहवोकुमारउदार। रागमास
चालिअदारकुमारसीरोमणीरोमणीमोहतोमोहनवेलरोकुड़ा
चेंदनअगिज्ञादरिरोवस्त्रत्तुपरातेलफूलेत्तरेष्टमनविन्नव
पामीररोजूरुपूनतपांनत्तरेष्टहरोवेष्टरीष्टयहरीमूर्क्योजीव
तोरे। वीध्यापामोवीध्याधरगहरोष्टमनविन्नवपामीरो।
योवनत्तनष्ठमीत्तीत्तपाष्ठीकीराष्ट्रगदाअंगिज्ञानोमूर्कपरीति
हवणारास्तकीजोयरोजेहस्वेमेवमनमष्ठत्तुपरोष्टहार।
जमरकीमाकरिमनरत्तोरोजरोजिसयतपरमनएहरोक

स्त्रीतरे ४

तरोप्रद्वा१३॥ तातस्याणीयमज्जोचरिरेऽनष्टुवहुकोमत्त्वं
कायरोऽहध्वरवश्चरोजीपवोरोतेसुज्ञधकरुनवजायरोप्र
द्वा१४॥ तिलुतरणदीउनहीरोसहिस्त्रदारुणीसून्तटसं
ग्रामीश्चमुखवीनोकोजापिनहीरोजाहोपाचसिनागाउऽु
ल्कातरोप्रद्वा१५॥ ऊमरकहिस्युणातोतजारोदीसेउजपुवज्ञ
वासूधरेगीरीवरचूरिएकल्परोतिमतेस्युजरकसज्जधरो
प्रद्वुश्चाप्ति। अणदीरिवल्नीएकलोरेकरिमोहसून्तटासूसंग्राम
रोसीलसीनाहस्यधोधरोरोसाधिमूकतीमनोहरगेमरो
क्ष१६॥ प्रदेशनवचनतेसान्तल्नीरोहरष्याकालसंवर
नरनाथरोसीषदीधीसुतचाल्नीउरोलीनपूजीआहूध
लेश्वाथरोप्रद्वा१७॥ सायष्याक्षिसूताहोजश्चरोकीधीन
वफनीसांणिध्वाहर्मरोनादनीसांमनोसांतल्नीरोरो
जासिद्विरथसांतोषायरोप्रद्वा१८॥ सून्तटसाहोसाहि
आथक्षिरोपक्षिगज्जवरबहुञ्चसवाररोअन्तीतण्ठाक
णउठल्निरोलोहल्लागतितरवारिरोप्राश्चाप्ति। नाल्नाउ
बरञ्चरणाच्चागल्लारोकरिकटारीत्रिरणकेल्जरोषांष

उपरिषाधां पक्षिरोयमेत्रायधनो मत्वं सलरो प्राप्ता २०॥ वी
द्या उज्जाज्ञविचीरज्ञाधतेरो बांधो प्रदूषनमूकी नागपा
सरो मिहर प्रथम बल ऊषो एष योरो निजी वीतनी न
होत्रा सरो प्राप्ता २१॥ वृश्चित्ति इ प्रदूषन आवी उरो नमा मो नी
जतातनिपायरो लपातातणी आग्ना एकीरो मूको सदि र
एनी उपरज्ञायरो प्राप्ता २२॥ प्रदूषन प्राकमदेषी निरो चंति
काल सवरन ररो न अल्लिविवस हवीरो देषी ते ह
वो क्रमरक्तत काजरो प्राप्ता २३॥ सकल वीद्या धरते मीनि रे
पटबोधी मोहो छवकी धरो प्रदूषन क्रमरनि हरषस्तुरो जो
वरो जतण्णपददी धरि प्राप्ता २४॥ ते दीनथी चातपांच सरो चं
तिप्रदूषन नीधन उपायरो बिसतां स्तुतां उरतां रोषा तां प
तां ठनो नवजायरो प्राप्ता २५॥ वलीते क्रमरमन चंतविरोक
रिमा २६ तणी उपायरो क्रीमामसो तरिकां मनिरो वनजे
एग्या सहज्ञायरो प्राप्ता २७॥ साधकृत प्रासाधउपरिरोक
हि जेठडि ते बल वंतरो तना जने इताहांथी नाकालिरो

रम केम्बिक पटधरी चीतरो प्रारम्भ पृष्ठ स्वरूप को मान्यता
तथी रो। चक्र अद्वैत गोप्य रुद्र पितृ उदार सोली हो रहि जे घक
दे व तारो। देष्टी चंतवि वीच मज्जा ररो प्रारम्भ। मन्य प्रत्यक्षा
पीन रए कल्पो रो। आवी मुख प्रिय। परम पवातरो हरष
धरी वी द्या को सुरो आयो की रट ऊ मर के रो। मी ते
रा प्रारम्भ। वीन यकड़ी निवो लावी उरो। इनान्ने इन्हें उतरो
गुणधाररो। मनव लघा मूषि त्रचर्णो अमो के हुक हुम
न आन्य साधा ३० नो हारस ३०॥। तेवें जीवन माहिदा घवि
रए क कालश फो सुणो न्या तरे इहो थी तो न लें नीक
जिरो तिथि निवासि व सूधाय वीषा तरो प्रारम्भ। सो जलनी कु
म कुतो हल्ली रो। पिशो काल यु फो मो लुपरो संकार होत आसा
स चलुरो। दीरो न रो न तंक के रक्ष परो प्रारम्भ। को जलनी घर स
सामो आवतो रो। दीरो सो मव रण वी को राहन रो। रातो जलन
करो को पो। उद्देश्वी सिद्धांत दीरध वी करो त्वरो प्रारम्भ। न
जीव लक्ष्मी रक्ष मांसणो रो। पूछि उक्त एण्डा सिद्धि तीकूर

रोपूष्टे नादबोकां मणोरोपूरीगीरोगुफाबोल्लिसुररेप्र
मात्ताकलनराषसहसहीरेमुठनेजाएि सररासरत्तोक
रोचयथीआहोकोआविजदोरोआवोउआजाएि नरपे
करोप्राइपा॥ ऊमरकहिषणएकमोरोकसंमुष्टीप्राहो
रिचकचुररोएहवावचनतोहावोत्तायिशेजांहोउलो
होयनरच्छुररोप्राइद्वा॥ नीनीयजांणादेवयमकाहिरो
उतोबलवत्पुरघपरधानरोआवोइहाकुणकारण
रेमाझोआपूऱ्जोपमदानरोप्राइण॥ ऊमरकहिमाण
नहीरोमुठआजसांपरणाआपरोकतोहलेकारण
आवोउरोप्रायउमात्रपणुठसाधरोप्राइय॥ उत्तेची
मरज्जगहरघसुरोआमिषकगषेटकसोररायरोकाले
राषतकामउमरोनरोस्तस्तेटसाषदेइनमिपायरेप्र
ला जलेईतीहांथीनोकत्तोरोआवोत्तातसमीपसुजां
एरोकपटीकापटीकीउचरिशेआतोकेहवुकादम
नआणिरोप्राइण॥ एकदीवसिवनमोत्तनीरोलेप्रद्वय

मननिकहि वातरो अतीव लंबं ततेजों एयरो पिसि नाग गृ
सफामांहि चातरो प्राधर्म् ॥ धीरपण धरीएक लोरो पिगो नाग
चफामांहि कामरा नाग नारी हवी आकत्तीरो दधी सप्तो
जागलो गंभेय ॥ प्राधरा चंचल चीतथा कामनारो आवी प्रद्यु
मनपा मवापा सरो सात्त्व सुन्नटपणि संचरो से आवा मधिगृ
फा सूवीला साप्राधरा ॥ नाग त्रादस तव देषा ररो फणा मूग टा
मण मनोहा ररो पुढिप्रद्युमन को होतम्होरो कण नामक सो
अधिकार ररो प्राधरा ॥ सांजली सो रमन चंतविरो सूर सुन्नटप
पुरह अंगरो वना लावा नोदवीलो कतोरो आवो सुरुम सेदीरम
नरंगरो प्राधरा देव प्राडि कण कांरणि रो आज आवाव्यमारिजे
हरो क्रमर कहि उम संपदोऽजौ वा आवो मनधरा नहरो प्राधर्म
सांजली सो रह रुद्धो धरुरा लक्ष्मि आवा तसो मूरुमात्ररुक्तं
मकहो तेह करुरो करुआ स्वम आज पवार्तरो प्राधर्म ॥ नहा
गतेजों आपा उजलोरो वस्त्रा विणा सोहा संणा सार
करषा दायमा दकारो वाद्या प्रसन्न कुरणा विदा

रोष्टुष्टुनादबोहांमणोरोपूरीगीरोगुफाबोल्मसुररोप
मात्सकाल्नराष्ट्रसहसहरेमुठनिजोणिस्तरासरलोक
रोत्रयथाओहोकोआविनदोरोओवोउओजोणिनरपे
करोप्राइपा॥ उमरकहिषणएकमांरोकसमुषीधाहो
रिच्छकखुररेएहवांवचनतोहांबोल्नायिरोजोहोउलो
होयनरल्लुररेप्रद्वाइद्वा॥ नीर्जयजांणादेवयमकाहरो
उतोबलवत्तपुरघपरधानरोओवोइहाकूणकारणि
रेमाझोआपूञ्जनोपमदानरोप्राइगा॥ उमरकहिमाण्डु
नहीरोमुठओनसांपरणाथरोकतोहलेकारणि
आवीउरोयउमात्रपएउठसाधरोप्राइटा॥ ठत्रचौ
मरज्जगहरषसुरोओप्रिष्टकगषेटकसोररायरोकाल्न
राष्ट्रसकामजामसनिरोस्तस्त्वेलसामदेइनमिपायरेप्र
लोनलेइतीहांथीनोकल्नोरोओवोल्नातसमीपसजो
एरोकपटीकपटीकोउचेरिरोओनोकेहबुकद्दम
नओणिरोप्राइणा॥ एकदीवसिवनुमाल्नोरोलेइप्रद्व

मननिकहि वातरे अतीब लघंते तेजो एयरे। पिसि नाग गृ
स्फामाहि च्छातरे प्राधर॥ धीरपणूधरीएकज्ञोरे। पिगोनाग
युक्ता माहि कामरा नाग नारीह वीच्छाकल्नीरे। इष्ठीसुप्रसी
ज्ञायुत्तो गंभये। प्राधर॥ चंचलच्छीतथी कामनीरो आवी प्रद्यु
मनपाठवांपासरो सीत्तसुन्नटपणि संचरोस्य आघोमधिगृ
फासूवील्लासाप्राधश॥ नाग त्रीदस तवदेषीरे। फणीमूगटा
मणीमनोहाररे। पूढिप्रद्युमनको होतम्योरो कुणनोमकसो
अधीकाररे प्राधधा॥ सोन्नत्तीसो रमन चंतविरो सूरसून्नट्य
एरहञ्जरो वनीतावो नोदवील्लोक तोरे आवो सुरुमंदीरम
नरांगरो प्राधपादेव पूढिकुणकारणि रो आज आवाच्यमारिजे
हरो कुमरकहि उमसे पदोऽरोज्ञो वाच्छावो मनधरी नेदरे। प्राधर
सांन्नत्तीसो रहरुषो धर्तुरो लक्ष्मि आवात सो मूरुमीतर्जुको
मकहो तेह करुरोकरो आस्थम आज पर्वतरो प्राधुण॥ ना
ग ते जाच्छापीउजेत्तरे। वस्त्वाविणा सोहा संएसारहो रुझ
टुड़ि अमादको द्वाद्या प्रसन्नकूरणारुद्धररो प्राधर

जान्नन्नपुरवाहकोरेत्ने इआवो अनगकमाररोदेवेदकी
रतीकहिपोचसिरेदेषीचंतविचंतमलाररोप्राधृण॥
हहां।रागसामैरी।वीचारीवनएकदाज्ञावातेस्तयेच
देषानिएकवापाका।प्रद्युमनकरवावेचाशुरसूलटा
बापीकासांहिकरिप्रवेसालानलेतीहांथीनीकलितेहनि
नमिनरेसारपिमोर्द्युमनएकत्तोसंन्ततांततषेवाजूधर्व
करेवाकारणसामीज्ञावोदेवाऽ।प्रद्युमनजवसामोषशज
वप्राहारांनिजूधादेवतदामनचंतविएनरयन्यप्रबुधाऽ।ह
षीतज्ञापिक्तमरनिमकरधजसुवीसालाजिदीरिपरदत्तत
एंगीलगतिततकाल्नाप्ण॥मकरध्यललेइनीसस्योवाव्य
षकीवमवीरातवतेषबंधवचतविएहञ्चतीसाहसधीराद्॥
रागसामैरी।चालि॥।धीरदेषीसेजनसुषपाव्य।वलीस
हवंनरमवाज्ञावा।त्योहांअगमीतणोक्तुदेषी।कहिप्रद्यु
मननितेहषीरा।ज्ञाहांप्रवेसकरितसेतातेहकहायञ्चता
बलवोतापिबोतीहांपणकामलासाराजिमसीतल्लवानी
मजारार॥।हवदेषीवदिकरीक्रोधयोस्त्रसूषप्रद्युमन
ज्ञोधाक्षादेषीनीलयन२लाषावस्त्रमदीयधरातोष।

यिए ज्ञीते ए न य ज्ञासि। ए विवस्त्रुरदिजेषा सि॥ नीक
नीजूरुष्या स को मार। हीव तो जग घासी अथे राम॥ मैषा मै
तीपरं वै तत्त्वे इ जावि। कल्पी श्रुमन निसं तत्त्वा विषय वै तत्त्व
विजाय ज्ञे देवात्मे इत्ता न्तवत्ति तत्त्वे वाध्या॥ चालिस काक
रोपरी हा रा वां मदी षण दे वरदा रा धरी मेष रुप तीहो आ
विसी रसु प्रद्वुमन अमाविंधा॥ बहु कृपि नाके रीषा
हरा तिणि देव मना वो हा रा वै जबेत जो ए देव आपि मणि
मुगट कुम्हने सुञ्जना पि॥ पाहु कादी य अंसु त मात्ता॥ दी
यगा वती गीत रसा त्ता। त्ता न त्ते इ आवै तो दा सि। पांच सि व
लमन मां रीसा॥ एकदा कहि पांच सि च्छा ता वत्ती कपीत
वनं तवीषा तात हो कोर त एं वैष दीसि॥ फल पक्क देघी मही
सि॥ रहि तीहों कपी च्छ हृष्ट चैमा तैथी जरनि सि कि को आ
यंका तेह व नुमां प्रद्युमन अपि गो दो गो वृष्ट चढ़ी कृपा बिगो॥ गो
दीष्ट त्तेगु जूल त्ता वो त्ता दां ता धरा किंक्रो धधी उठ त्तन ता ध
धुमन जड़॥ वषधृष्टी मिकमा स्यं वै तुरन ही मोत्ता रहि वृ
षयी पूर्णो वो द्वर जां मापि ते वृष्टन गयो॥ हण वा तो भा व

त्वा वृष्टवटोपाया न्नो। अहमनघणी वाररं कि॥११
हारी देवन मित सपाथा की द्या वारा॥ देश जिजायी
अहमन करो उपिरिबिगो। आवतो सह साधि दी गो॥१२
देषादेमन संजाला था वली बाल मीकं गी रीले॥ जा
या एक रात चढ़ी रहि जेहा काहि त्रिती वली वो तो तेह॥१३
चढो क्रमर का तो हन काम रमार नोर जनी अमीला वारा
आवतो सन्मध तेह का खा॥ दीजो सपिस पवी करा लता॥१४
फणी मीकं रिछुत कारा चल जीझा यवक्रं वीका राकरी
क्रोधपाणा जपड़ा कि। तव काम चपेटो यतानि॥१५ तव
पश्चग र करा देवा कहि उमर करु रुसे वा आपा कव
ठ काम निहाए। वला मूझी कादी का हूरा साधि॥१६ तोहाँ
आज्ञा वो प्रदूषन प्राता न्नत वल जाए या चेपो चलि ज्या
ता वली सरा बगी रा॥ रहि जखक्का नाम काम पी साल अ
ल का॥१७ यहि उस एपणौ धज्जा धीरा ताहो जाए ते बा
वन बारा मकर व्यजमन मासूधा चढो जो पूरुष पर व
बृधा॥१८ जष्मि दग उत तका ला॥ उगे क्रोधी काम पी
साल। हसी बोली वच तव काम। जपि को परणो नहीं मा॥१९

अहो जूधकरे वाका जि। नथी आ यो हसी रराजा। सांजली जग
आती धरणी कातते थी जो वाचा वो उठन्हा तरा॥२३॥ कूरह दीन प
एनव्य को जि। आ ब्य आ दर न्नाव जदि। मुषमीष वचन न न
गो। सह सजन सुही तराष्ट्रो॥२४॥ एह वां मधुर वचन सूरणी हवा
न्नाजो धर्म मन नि कहि ते वा॥ न लिङ्गा वात म्यो मुकरां माकरा
वानय कारे सीरनां मा॥२५॥ हवि आपण आज सपाश नेर के उ
रकों कण न्नाश कटी सूत्र र डुड आपि कांति तुषण कं रिया पि
लालन लेइ धिरि आ यो। मातता ततणि मन न्ना यो। वली वपि
नपति एक वारा मो कलो। कांसदे व कुमार॥२६॥ ही गो सुहर स
पएका है व वेता तन रङ्गा तवी वेक। वांकी तीकौण माहिक गोरा
करि बदूष र रव्य अतीषो॥२७॥ सुल कुकं सकृस्त देहा ज
पोपाय तण्णी पक हरा हा ध सांतोधरो माराय सूरा पगाशा हा रक
वक कुरा॥२८॥ नान रुपधरो कहि नां म। धयो से वक हूँ ज
कों म। आपा सांषध नूष न मिपाय। आवाना जधिरि सूषा
थाय॥२९॥ वत्ना न्नात कहि सूरण। आजारहि वेल वं न सू
राना ताहां लो न धण्णो उठणा य। सूरणी धर्म न वेगि॥३०॥

ते वर्वतालं क्रोधधरे तो। हुरनोक्तसमधरतो देहीक्ष
नवपांसिङ्गमा रादेवक्तादिये दिणी वाराइ॥ देवच्छ्रेष्ठ
तज्जन्म उद्धरादी उपुष्ट तण्णे दर्शनादर्शनी तो त्रिनवत्त
कदाष्टाते देववीद्याधरराष्ट्राइ॥ ते दत्तापितोष्ट द्वृहत्तज्ज
कावरुवाच्च सूर्या रीच्छ्रेकाञ्चयराजी दज्जापडे प्रत्येकी
गेहरप्रवेसकरातो॥३॥ दाहेवीद्याय दांष्ट्री वीराहृष्टदेव
वीद्याधरवीराअपराजी तज्जन्मेतो। छोलेदेपर्वतीर
सकरातो॥४॥ घयो नीरवधु तज्जवरयाउरीलोगोष्टह
मनपाया उज्जीवीत दो नदा नारा करुङ्गु उक्तत्रत्तप्रका
रा॥५॥ अंडजानवीद्या वहनी हारा उपिष्ठ द्वृहमनादिसु
षकारात्नान्नलेननिपूठि वाताउरुज्जश्पाताङ्गसाहा॥६॥
उएवर्तीयवो धोउ आज्ञ अंगिवेन अक्ष क्षेत्राका क्राक्षिडि
षगवीद्याधरवासापूर्ताकि नरागत लाज्जा॥७॥ वारदेव
वीद्याधरणा॥ अतामतो मुक्तमातृदघोर्णमन्वे वेगइजो व
नपां व्योएकराजसुतापरणाव्यो॥८॥ तडको तातणो झ
जीत्नाष्टा॥९॥ वैरर वंसं करुङ्गुक्तन्नाष्टा॥ एकको वहन्तातणी

ग आवा वन सां रम वारं गाइ द्या। ठीड़ जोतो वसो तवी हारी॥ मु
ज बोधी गयो लै ना रो। एह विश्रव सर उही ज आ व्यो। वी द्या बै
धन धीति हो मा व्यो। इण॥ तिणि अवसर करा य वावे का आ
वावो लिवी द्या धरए का। मनु वेग सुए ए मुझ वाए॥ वसनि ह
राजे उरनां ए॥ धण॥ जी खुजो वात मुझ न रता रा। नी तो धांगा
कर परा हा राय म कही उरपा सपगवी। उर ऊषे मष वर लै
व आवी धरश॥ तो हो जाए कहु जे काहा व्यो। अराजे ह धी ना रा हो
मा व्यो। मनो वेग सुए ते ह वाता कहि प्रद्युमन नि सुए न्यात
अरापि रघु करणी किम का। जिा बली अर री सीपि रहा जिा सु
ए को मकहि उर क साथि। आ वी वनी तादे उर उर हाथि॥ धरौ॥
उर मी त्रथयो हु आज। कोइ करी न न धीए का जाकर यहा
मनो वेग उग-उगो। अरावरांत समी पियमा मो। धधा॥ देखा
वसत करि छिवी चारा। वी द्या द्या बैधन किम परी हारा बल
वांत तण॥ एह कामा अन धा किम वी द्या वी रांसा धपा॥ जांगो॥ व
ज वंत ऊमा रा। वी द्या मी तणी अधी कारा। यस वसो तष जो
वी आरा॥ अद्युमन सुमत्तो हो तका री॥ धद॥ करी आद

सनदीधुं आविजन्मे सफल हम कीधु कहि ऊ सत्नीत मोमा
हाराजा मुक्त प्रसन्नथर्थ चीत डगा जाधणा वदि प्रद्युमन अव
सरपांती। दुणो वसंत सदा सुषणां स्ती॥ परन्मासी नजिक हृषा प
लहि ईंगती सोगसों तापाध्या सीत वो त सदा सुषपा क्वाभी
त्रवीद्वाधणी वसि आवि। सीत रन्त धरि न र जेहापां मित्रं इतः
एपदते हाधण॥ कहु मीत्रपणाघ की गेहात द्योचीत धरि उण
जेहामन प्रसन्नथरु ऊ दीरि। वली सो लत्ततों सुषमीरि॥ ५०॥
परनारीत ज्ञानुण वो ता जिमे कीरत तत्त तापसरा ता कर छा द्ये
लकरं तो वसांता कहोते करे सान्न द्योसत॥ ५१॥ हरी ड्योणी
तम्यो जेह नारी। करे न ग्यनी समी सुषका री॥ आपोमाण स
वेगनिहाथि। वह वस्त्रवी चुषणा साथि॥ ५२॥ प्रद्युमन तु व
ननथीथापी॥ मनो वेगनिवनीता आपी। तजीवइरमांहो
पांहिते ह। करिच्चतीघणे धर्म सते ह॥ ५३॥ हवात्रद्युम
न नावहूमीत्रावी लीवसंत वै सषवीत्राकनानेरा ड
जात्त चुवन्मांति। लादाय प्रद्युमन ननिवन्मचंति॥ ५४॥ मनो
वेगस्त्रीआसु सोन्नागी॥ न जनेशरगंयसीषमांगा व्रु द
मन सुवसंत आनदि। सीधु ऊट ज॑ द्यीन

ताहोथीष्वद्वृमननीजपुरआव्या। नीजनयरवसोतसधा
क्वा। नागधनगारावनएकराम। तांहोस्वीरणयुफाच्चनीरो
मापद॥ लेइष्वद्वृमबधवतणोउपदेस। ष्वद्वृमनगयोतेल
प्रदेसायुफासधिगयोजवकामादेवस्वीराष्वन्निदीमोतोम॥
पुन्यवांतजोएगाहवात्ना। आपि अगरचंदननीमात्नास
एकउस्वन्नठुत्रनीसेजाआपि अमरधरीबहुहुदेजापद
तीहोथीहमधनवनमाआविहुदुहुदेवमलोउगागावि
मागितेडनिआपुआज। मांसुएकेसुणोसोरराज। ॥५८॥ जी
नधमीकरोधराज्ञावातजोहुजीनकुरसन्नावाधमीधन
कणबहुथायाविगिसुग्तीबहुसमवाय। ॥५९॥ कहिदेवकरु
मिप्रमाण। आजथीबहुजीनवरआणि। उधमेहुरयउमी
ब्रामुजनिकरोपुजपवीत्र। ॥६०॥ लोउपुष्पधुष्पएकसा
रावरनीपंचरोपणामनोहुराउन्मादनमोहनजोए
महसोगसोतापनावोए॥ आपानिकरिदेवप्रणाम
जेष्वद्वृमनगयनीजगमावनीजयपरवतगदीका
मातेउपरसीजनधाम। ॥६१॥ मणामनजानवबउदाराए
कविणावलीमनोहाराष्वद्वृमनजीनमादीरआविमी

जीनपुडीनिविणवेजाविद्म। गरीहेरवलीएकजोगे
वाउवेगदीद्याधूरंगो। करोवीद्यायएकच्चिकास। २ हि
स्वरसतीखुघरवासाद्प। तेहनिएकपुत्रीसारी। २ ती नांम
धरागुणधारी। विणसोन्तलिंसांसकोमालनागइकोमसमी
पिबाल्नाद्द। देषीसुपञ्चनञ्चपारायद्वीष्वहवलची
तमजारासमाप्तालउस्वीकृतोताकाउवेगआवोसकंताधृ॥
रायजोऽकहिसुवाचाराभुगतीजनीजोकिउदारावलीवीवा
हवाधांकजावी। २ ताप्तद्व्यमननिपरणवी। ३ ठ। कनाल्नेशनि
साहसधारामलोपांचसिच्चातविवीरासबरादीकपांचसि
नाशचंतविएहनिपुन्पसमाइ। ४ ए। सोन्तस्यांनेकला
नञ्चनेकाएतोपुरणपुन्पत्रवेक्कामकेरध्वजठत्रउद्ध
ररथविस्तानिकोमऊमाराइ। ५ उषधनुषधरीषंचबांण
दिरिपरवसकोम्पनाधांण। साथिकौमरसङ्घपंरीवारा
आवोनीजपोरकोमऊमाराइ। ६ कोलस्तेवरनिस्तीस
नाम्पा। रायच्छतीघर्गोआजचंजपांमो। कहिदेवेद्दको२
तोपुकीजिआफलप्रहमननांषिरिखनीजि। ७ र। हहा।

लीजिफर्नेबहुपुन्मनो। २मणीरोजनीधोनायिमजाणी
लवीआणकरोजानषुजामुनादानाथ॥ २थविसीनिसं
चरोजान८सहोतसुषकाराकनकमालाचरणेनमे
जोवनगुणलालारा८॥ ३वाहवनरोणातेहवीदेषीष्वद्य
मनसुपाञ्चनालोषाक्षिक्षेमरणीवांयीमनमध्यत्ते
पाढ॥ षोलित्वेष्विसारीउबोहिधृराबहुरंग। कोमलक
रकमत्तिकरीस्पैस्त्रिष्टुमनञ्जेग। धा। नारीकहीयते
हजैपाँसीप्रद्वृमनसंग। बीजीनामिनारिठि। सेजनसं
गञ्जनेग। पा। मातञ्चासीसथीउराउप्रद्वृमनगयो
सुष्वगह। वीरहोनत्तेतापिद्विकोचनमाटोदेह। द्वा।
रागकेद्वारो। चालि॥ ४देहदयाअतीञ्चाऊजी। नरवि
चंद्रत्वेचंपाकनी। वह्नीस्तननोजेननवआदरिसं
खारक्तीलासहपरीहरिश। चंगिञ्चबीरञ्चरवे
जमगेहमी। कमलायकोनलददकी। वह्नीतगमि
होगुल्लेपवसी। मत्तुकुदमोगरकारीकेवसी। अ॥ व
नोसीफलसाक२सेलमी। नणमिवजीनागर

वैलमासुषकनकमात्नो नवदिन्नाषाचंतिकां मतणा बद्ध
अन्नीनाम्भारा एवीमातादुषणीजांणा। अद्युमनबोल्ने
मुषप्रीञ्जावाणी। कहो मातव्रयाक सीतमञ्जिग। कम
लाय केत्नेक मत्तसांगि। धा। सुणीचेषाकां मतणादा
धिअंगञ्जे जी तमधुरवचन जापि। सुणीकां मञ्जे मर
मनदुषवहि। धीगचैषीतमेतणुकहि। पा। जुउए। वप
रीतपणुमोडु। सुतसुजजुनीबोलिषाडु। यमवोचा
रकरीप्रद्युमनजणा। सुतमातवचनकोञ्जवण। धा
तवकनकमाजोकहि सुणीकां माकहुकए। कञ्ज
तीञ्जीरामाषदीराटवीवनमाएकसमिगइका
जेसांवरसुरवाभगमिअ। तीहोसीत्नाएकञ्जती
उठत्नथा। दीरामुरनायिजइगतीषजथा। जइसी
रठालीरुठरुलीधोसुरस्तनपाननवउमेषो। ट
मनहंषधरराजादीधो। या। नोवीनीजधिरजी
नसांतोपो। मुस्तनपाननवउपोषो। वहीतञ्जं ब्र
वृषतणा पिरि। जोवनपांमोउनीजधिरि। ४॥

रमवारुर्जसांगिवां छेता। २ मीराषोरतीपतीजावेता।
नीदरमुर्जलीवसधावसि। प्रमदोपातण्डुनिक्रान्ता। १०१
कुसतोसकल्जश्रीक्रामामारूपवोती। उपुरषसानांग
पुरएमती। एहवांमायनोपापवचनसुएणी। वनीकामा
कुसरकहिसीरधुएणी। ११। एहवांतद्यवचनज्ञारांत
लीयातोनरकपटल्लमांजइन्नलीहायक्रातीउतम
नेकोम्पनाएहधुनबोलिखमिनी। १२। वल्लीवतनन
लेताजाणानिाप्रधुमनउत्तोमनआणाणानिा। गर्बीन
जेहिजीनधुजमा। हानीजसुववृतांतजवुरुठवा। १३।
ठिसागरचड्डुनीमजीदा। जीनछलीपुढालाढतां
कहोपुर्वन्नवावनीसुरख्चमी। किमकवाकलपाण
मातापांमी। १४। तव्रमुनाथस्वैवृतांतनदामहुद्वेदाना
दीकस्वेजलहोपज्ञप्तावीद्यालानतणा। उंगावानम
धुयजेन्नएणी। १५। वल्लीकामकनकमानागांदा। गर्बाप
जतीगउरीस्तेहि। काहरतीसुघुरुनिक्लोहयोःलाव
धानुभूतमोरतेस्तो। १६। कहिकान्तसंव
—८८

वांतौ। तेज्जागल्नकिमरुद्गजीवोंतो। तवकांक्षनमालायमन्
ए। कोनहीएवीद्यानितोलि। १७॥ मलीस्विवीद्याधरजो।
आवितोबुधिउठसुनवन्नाविसुणकांमेकहिवीद्याद
उमनवोहीतन्नोगपाहिलीउ। १८॥ हृषितथैवीद्याद्विदी
दीधीवीदीसुवेकसोमदनिलीधीकिंहिवीद्यादीनिगो
राणीथ्रतीयालएथीमाताजाएणीस्था। १९॥ तोउठसुए
किमसिधायाअपकीरतधीकोलज्जायायमकही
नमीकरजोमीवाताननयोचीतकाजहकहोमाता। २०॥
यमयाचीकोमगदोगिहि। कांचनमालादुष्प्रणीदेलि। क
हिवेचीतोनिवीद्यादीची। लीषधीसुउठइद्वासुरालनव
कीध्वा। २१॥ पाठिवनाताचराउकेरुपएरानवन्नागक
लुरिज्ञापंण। नपकाल्लसाँवरानद्वेषामि। स्तनककन
षष्पतञ्चगत्त्वाकि। २२॥ उठप्रहमेनत्तेषीतञ्चानाथ
तमेषुत्त्रकर्त्तदीधीहाथामनकोपधराजाजाए। क
दिसुतवचनसुउपटराए। २३॥ यमञ्चत्तलोक
नराजामाना। कराकोपक्रमेपरञ्चनामाना।

की लगातार को वहाँ मुझे न सिखा गत इ
संज्ञाय... एवं न बनाये जैसे जो लेइ
उमर न हो सकता उमर वनमा देने जा लेइ
तथा को वहाँ देने वाला तवचन है
को आपको वहाँ देना दिग्दया रहा॥
तद्धर्ष न न कर तुमना द्वादशी प्रद्विमन मुवो जा
कारसली या यदि मम अतक
आत उद्दि लिया तुमने तवचन पिणे आगे
विद्या के उड़ान मारा न थी। तव प्रद्विमन ति
व प्रद्विमन के कपटवा न॥२७॥ त
तारी द्विकरा ते सह रोधा उवा
तकान या गावे वर्ष पुर आवे वृतां तज
लापा या न जलनी काप ही ग
वर्तन रा द्विकरा या न जलनी जस्ति द्विप्रधावं
तो॥२८॥ न लभा या द्विने मर्ति॥ करि
को द्वर द्विकरा या न जु द्विकरता साँ

ग्रामिणीरमदकीधोषेचरकांमि।३०॥ तवकालसाव
रउहश्रीआगि। उपइप्तावीद्यामांगि। तवकांचन
मालायमन्नणि। तमिदीधासुतनिवालपण।३१ तव
कालसावरमन्नुषड्हांए। नाजकोताडुच्छितजाए
अन्नामानयकीबलातेबलाउ। उजृष्ट्रद्युमननिज्ञाप
मल्लाउ।३२॥ बहुवीद्याबलसाग्रामकरोप्रद्युमनन्नप
बधनबांधाधरो। पठिसीलातलिले६चंपावा। तवना
रदमुनीवृत्तांहाँआवो।३३॥ उरीप्रद्युमनमन्नता
आदरकीधो। नसीतामैनमन्नआसनदाधारुषाय
सामदरथीहलहो। प्रद्युमननिस्वरूतोतकहो।३४
तवकालसावरनृपनिष्ठोकी। स्मरवीनयकरीकरि
तरजोमालभा। अपराधघामाकरजोस्वांमी। रहोकाल
सावरनिसीरत्तोमी।३५॥ कहिप्रद्युमन्नआवोअर्जो
एअम्पो। सुउमातघमोअपराधतमो। कहिकांच
नमालाकमैगता। उउवांकलहोसुतराकरत्ता।३६
वलीपांचसिन्नातनिष्ठोमालिनि। कहिषेमाकरीक
रत्तोमालिवलीकालसावरकालकमारन। संतप

असिन्नाता अति सको मात्रा ॥३०॥ अती प्रात धीमु
ठोते सङ्कुनिवत्ती नगरत्तो कषेच रबडुनि। लेइ सी
घसधा बोवा नय करा। रुषमणीह रामलवाहूरषध
रा। ॥३१॥ अती प्रात धीमु छीत सुन्न सोलाज्जुनि म
ली आ। ताहां जाग्य अति सिबडु पत्ती आ। कहि देवं
द कीरति कहि बडु हरषवाहा। नारदमु नीवरनि
नेदन कहि॥ ॥३२॥

नानीकुरुते यात्रीया हृष्णः विवरण वदण्यादोन्निष्ठ
नीनि कुप्रतीज्ञा कुरीनीरुमामा हृष्णवात्रागत्यस्य श्रद्धा
वाज्ञात्वीग्रादुलातलानीकुरुते हृष्णवायारामारी हृष्ण
ग्रामीभान्नाकुरुते नारदीः इह यात्रा तारः ॥ नन्नान्नमें
कुछाकुधाप्याकुरीः नात्राक्षायावारुकुमाकुरावरीज्ञो
मान्नात्रेष्टावाः
ः योसरुक्याकुराल्लनीयावीः ग्रामाग्रामातरः ज्ञान्न
कुन्नामाप्तलायावाच्चामोः रक्षान्नायीकुरुद्वाक्षालात्र
ग्रामाग्रालच्छरो नाकुरदीः वाल्लमामातीयानीकुन्नी
ः नापल्लतोस्ताकुरुकुरुकुनीपद्धीः हृष्णाकुरुकुरु
ः कुरुलाकुरुकुरुयद्यीयान्नाज्ञारीतीनाष्टतीज्ञानाश्तुप्या
मान्नानीकुरुकुनीरोः लुग्नाकुरु ॥ २५.३८ ॥

५
४
३
२
१

	२३	२२	१५	८
११	९२	१६	२२	
२९	२४	८८	१४	
१३	१०	२१	२०	

ॐ वोङ्गी प्राणी की श्री कृतं पतलद विषेकं ॥
ऐ कर्यं दं च विषं हृष्टं नद वर्कं प्रजा
वर्ती कर्तुणं ॥ वी लोक मे द्वीपाणं ॥
दोष जो हरणी वर्ती कर्तुणं ॥ सर्वो
पदम् प्राप्य वलाहं ॥ गैरकृष्टं प्रपा
टन वर्ती रणी ॥ मे द्वी मे द्वी प्रा
कृत वर्ती वचा ॥ २ ॥ वा पदे वरे
दमा वती ॥ सर्वती पूर्णे मंदिरे
सर्वो वाच ॥ ॐ वोङ्गी कृतरन मे
त मे रुक्षा ॥ ॐ वोङ्गी श्री नह
वती न मे न मे कृ ॥ ३ ॥

ॐ वोङ्गी प्राणी की श्री कृतं पतलद विषेकं ॥
ऐ कर्यं दं च विषं हृष्टं नद वर्कं प्रजा
वर्ती कर्तुणं ॥ वी लोक मे द्वीपाणं ॥
दोष जो हरणी वर्ती कर्तुणं ॥ सर्वो
पदम् प्राप्य वलाहं ॥ गैरकृष्टं प्रपा
टन वर्ती रणी ॥ मे द्वी मे द्वी प्रा
कृत वर्ती वचा ॥ २ ॥ वा पदे वरे
दमा वती ॥ सर्वती पूर्णे मंदिरे
सर्वो वाच ॥ ॐ वोङ्गी कृतरन मे
त मे रुक्षा ॥ ॐ वोङ्गी श्री नह
वती न मे न मे कृ ॥ ३ ॥

त्रैकोनम्नेगनेजामनम्॥नेवत्तेवमंडणंदूदैक्षवंडणां॥प्राज्ञानेषुभिराघकु
लमंडणां॥संज्ञानातरपुंडुदैनीवापुं॥ग्रजपद्मावतीक्ष्मतप्य॥प्रा
रत्तनोच्चरनेज्ञानं॥१॥जैवरशीपद्मसना वदेवातदेव॥क्षुरन्तरवा
काद्वैरक्तदन्तेव॥सेवकतत्त्वस्त्रगैरुजा॥क्षारजेवकक्कोऽ
कीज्ञा॥२॥पोद्ववेद्यजेलहृष्टुवा॥जेन्वंडुजेत्त्वजीरुवा॥
हिंकुकुवीनतीक्ष्मासाद्यत्तेष्मस्तवादुदैप्यनंतक्तात्वे॥३॥मै
जापोद्वर्मिष्वधर्मिन्नेवो॥मैमनवीतेनहृष्टुवैहृष्टुतदेवो॥
प्यदैहृष्टुतदेवुद्वैलेष्मस्ताना॥वंडपुरुषपद्मपा॥४॥धर
पुरुषद्वैद्वयंदृवंदृत्तुत्तेपादुम्भनीक्षेवंदृहृष्टुव्यजोऽप्यत
तना वातेतीक्ष्मेष्मांत्, जन्तामजपंतादुवजाद्वी॥५॥दीक्षुवेव
वेलाजेदोतेनरेतोजाद्वी॥उद्यन्नैक्षमाव्युप्तोगपुरीपुलव्य
वेताल्लक्ष्मतनाद्वक्षेवालो॥तुरुजन्तामजपंतादुववीतेआ
जलेवलीवाद्वानेनन्नरावो॥गजसंव्यनागसदपनवध
समरंतादुटपोह्यालो॥उपजेवेवासामजालो॥६॥तनव
धवोलवीवाद्वी॥माशाज्ञराजन्मवादुवनावद्वी॥वत्त
जन्मज्ञराजम्भन्नो॥समनोष्टुप्तुप्तोप्तोलावज्ञनामजने
स्तुरो॥७॥संडुप्तुमापता॥पंडतद्वयामस्त्वावृतांस्तव
त १२५६

